हरिभूमि
सिरसा-फतेहाबाद भूमि
रोहतक, रविवार 26 जुलाई 2026

11 नशे से दूर रहकर अपनी ऊर्जा राष्ट्र निर्माण...

12 सिरसा में तैराकी का महाकुंभ शुरू...

खबर संक्षेप

6.95 ग्राम हेरोइन सहित युवक को किया गिरफ्तार

फतेहाबाद। नशा तस्करों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत थाना शहर फतेहाबाद पुलिस ने 6.95 ग्राम हेरोइन सहित एक युवक को काबू किया है। पुलिस चौकी हुडा सेक्टर-3 प्रभारी उप निरीक्षक रजत ने बताया कि वह अपनी पुलिस टीम के साथ एनएच-9 सर्विस रोड, भूना रोड फ्लाईओवर के समीप नाकाबंदी कर संदिग्ध व्यक्तियों एवं वाहनों की जांच कर रहे थे। इसी दौरान एक युवक भूना पुल की ओर से पैदल आता दिखाई दिया।

होटल में चोरी की गुत्थी सुलझी, दो आरोपी काबू

फतेहाबाद। करीब चार महीने पहले एक होटल में हुई लाखों रुपये के सामान की चोरी का पर्दाफाश करते हुए भूना पुलिस ने दो शातिर चोरों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से वारदात में इस्तेमाल किया गया ऑटो रिक्शा भी जब्त कर लिया है। थाना भूना के प्रभारी निरीक्षक विजेंद्र हुड्डा ने बताया कि 13 मार्च को गांव गोरखपुर निवासी राजेश ने शिकायत दर्ज कराई थी। पीड़ित ने बताया था कि भूना रोड पर गोरखपुर नहर के समीप स्थित उनके इंडियन होटल एंड रेस्टोरेंट में 10 मार्च की रात को अज्ञात चोरों ने धावा बोला था।

10.12 ग्राम हेरोइन सहित आरोपी दबोचा

सिरसा। पुलिस ने एक युवक को हेरोइन सहित गिरफ्तार किया है। सीआईए सिरसा प्रभारी ने बताया कि पुलिस टीम गश्त एवं चेकिंग के दौरान टी प्वाइंट खेतरपाल कॉलोनी सिरसा क्षेत्र मे मौजूद थी। इसी दौरान सामने से एक युवक पैदल आता दिखाई दिया। पुलिस की गाड़ी को देखकर उक्त युवक अचानक वापस मुडक़र खिसकने का प्रयास करने लगा तो पुलिस टीम ने उसे रोककर पूछताछ की शक के आधार पर तलाशी ली गई तो उसके कब्जे से 10 ग्राम 12 मिलीग्राम हेरोइन बरामद हुई। आरोपी की पहचान राजपाल निवासी गौशाला मौहल्ला सिरसा के रूप में हुई है। आरोपी के खिलाफ थाना शहर सिरसा में मादक पदार्थ अधिनियम के तहत मामला दर्जकर जांच शुरू की है।

मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान मेला आज

सिरसा। हरियाणा सरकार की मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान योजना (एमएमएपीयूवाई) 2.0 के तहत पात्र परिवारों को विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने एवं स्वरोजगार के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से 26 जुलाई को बीडीपीओ कार्यालय में मेला आयोजित किया जाएगा। जिला समाज कल्याण अधिकारी सत्यवान ढिलोड ने बताया कि मेले में मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान योजना से संबंधित आवेदकों को हरियाणा सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कल्याणकारी एवं स्वरोजगार योजनाओं की जानकारी दी जाएगी।

एबीवीपी का सदस्यता अभियान 27 से

सिरसा। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा आगामी 27 जुलाई से 4 अगस्त 2026 तक जिलेभर में व्यापक सदस्यता अभियान चलाया जाएगा। अभियान के तहत विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा व्यावसायिक शिक्षण संस्थानों में जाकर विद्यार्थियों से संपर्क किया जाएगा और उन्हें परिषद की सदस्यता ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया जाएगा। एबीवीपी के जिला संयोजक मोहित बिश्नोई ने शनिवार को बताया कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद केवल एक छात्र संगठन नहीं, बल्कि छात्र शक्ति को राष्ट्र शक्ति में परिवर्तित करने वाला एक सशक्त राष्ट्रीय आंदोलन है।

दिशा की बैठक में सांसद सैलजा ने अधिकारियों की कार्यशैली पर जताया असंतोष

अधिकारियों को फटकार: कागजों में नहीं, जमीन पर दिखे विकास

हरिभूमि न्यूज ▶▶सिरसा

जिला विकास, समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की बैठक में सिरसा की सांसद कुमारी सैलजा ने अधिकारियों की कार्यशैली पर कड़ा असंतोष जताया। शनिवार को सिरसा के पंचायत भवन में आयोजित बैठक में सांसद ने शहर की सफाई व्यवस्था, पेयजल संकट, सीवर ओवरफ्लो, स्ट्रीट लाइट, बेसहारा पशु, स्ट्रीट डॉग, सडक़ों की बदहाल स्थिति, राष्ट्रीय राजमार्ग तथा रेलवे परियोजनाओं में हो रही देरी सहित कई मुद्दों पर अधिकारियों से जवाब-तलब किया।

बैठक के दौरान सांसद ने शहर के विभिन्न क्षेत्रों की तस्वीरें अधिकारियों को दिखाते हुए कहा कि जमीनी स्तर पर हालात बेहद चिंताजनक हैं। उन्होंने कहा कि केवल कागजों में विकास कार्य पूरे दिखाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि जनता को उसका वास्तविक लाभ भी मिलना चाहिए। बिजली विभाग की कार्यप्रणाली पर नाराजगी जताते हुए सांसद ने गांव आनंदगढ़ में एक गरीब महिला के प्लॉट में लगे ट्रांसफार्मर और बिजली पोल को दूसरी जगह स्थानांतरित न किए जाने का मामला उठाया। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि यदि धन की कमी है तो वह अपनी ओर से चेक देने को तैयार हैं, लेकिन गरीब परिवार को राहत मिलनी चाहिए। उन्होंने अधिकारियों को फटकार लगाते हुए कहा, आपको शर्म आनी चाहिए। इतने छोटे-से काम के लिए लोगों को बार-बार चक्कर कटवाए जा रहे हैं।

सिरसा। जिला विकास, समन्वय एवं निगरानी समिति की बैठक लेती सांसद सैलजा। फोटो: हरिभूमि

रेलवे परियोजनाओं में देरी

पुरानी कचहरी रोड स्थित रेलवे अंडरब्रिज (आरयूबी) और फुट ओवरब्रिज के निर्माण में लगातार हो रही देरी पर भी सांसद ने रेलवे अधिकारियों को आड़े हाथों लिया। उन्होंने कहा कि परियोजनाओं की समय-सीमा बार-बार बढ़ाई जा रही है। जो कार्य वर्ष 2025 में पूरा होना था, वह अब भी अधूरा है। फुट ओवरब्रिज की प्रगति भी पिछली बैठक के मुकाबले नहीं बढ़ी है और प्लेटफॉर्म नंबर-3 का निर्माण भी अभी तक शुरू नहीं हो पाया। उन्होंने वरिष्ठ कांग्रेस नेता सुरेंद्र नेहरा को इन परियोजनाओं का भौतिक निरीक्षण कर रिपोर्ट देने की जिम्मेदारी भी सौंपी।

अधिकारियों को तुरंत बुलाने के निर्देश

पब्लिक हेल्थ विभाग की मैकेनिकल विंग के अधिकारी बैठक में अनुपस्थित मिलने पर सांसद ने नाराजगी व्यक्त करते हुए तत्काल उन्हें बुलाने के निर्देश दिए। उन्होंने गांव कुम्हारिया, दड़बी, बुढ़ाभाना, चोरमार और खेड़ी में पेयजल संकट पर भी चिंता जताई तथा उपायुक्त को निर्देश दिए कि स्थायी समाधान होने तक टैंकरों के माध्यम से पानी की आपूर्ति सुनिश्चित की जाए। नागरिक अस्पताल में एंबुलेंस की स्थिति पर भी सांसद ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी से जानकारी ली। बैठक में विधायक गोकुल सेतिया, विधायक शीशपाल केहरवाला, डीसी शांतनु शर्मा, पुलिस अधीक्षक दीपक सहारन, एडीसी अर्पित संगल, जिला नगर आयुक्त सुरेंद्र बैनीवाल, वरिष्ठ कांग्रेस नेता वीरभान मेहता, सुरेंद्र नेहरा, राजेश चाडीवाल, सुरजीत भावदीन, सुमित बैनीवाल सहित अनेक अधिकारी मौजूद थे।

शिक्षा मंत्री का इस्तीफा युवाओं के संघर्ष का प्रमाण: सैलजा

सांसद सैलजा ने शिक्षा मंत्री के इस्तीफे पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि यह केवल एक मंत्री का इस्तीफा नहीं, बल्कि देश के करोड़ों युवाओं, विद्यार्थियों और लोकतांत्रिक मूल्यों की जीत है। कुमारी सैलजा ने कहा कि शिक्षा मंत्री का इस्तीफा इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि युवाओं की आवाज को दबाया नहीं जा सकता। जब छात्र अपने भविष्य, शिक्षा व्यवस्था में पारदर्शिता और न्याय की मांग को लेकर लोकतांत्रिक तरीके से संघर्ष करते हैं, तो अंततः सत्य की ही जीत होती है।

प्लेटफार्म पर सीट के नीचे बैठा सांप, यात्रियों में दहशत

हरिभूमि न्यूज ▶▶फतेहाबाद

- टोहाना रेलवे स्टेशन पर यात्रियों में मची अफरा-तफरी

टोहाना रेलवे स्टेशन पर शनिवार को उस समय अफरा-तफरी का माहौल बन गया, जब प्लेटफॉर्म पर ट्रेन का इंतजार कर रहे यात्रियों ने सीटों के नीचे एक सांप देखा। सांप दिखाई देते ही यात्रियों में दहशत फैल गई और मौके पर भीड़ जमा हो गई। घटना की सूचना तुरंत रेलवे अधिकारियों को दी गई। अधिकारियों ने स्टेशन मास्टर को सूचित किया, जिसके बाद स्नेक कैचर नवजोत सिंह ढिल्लों को मौके पर बुलाया गया। सूचना मिलते ही नवजोत सिंह ढिल्लों रेलवे स्टेशन पहुंचे और यात्रियों द्वारा बताए गए स्थान पर सांप की तलाश शुरू की। काफी खोजबीन के बाद सांप प्लेटफॉर्म के पास बनी एक नाली में छिपा हुआ मिला। उन्होंने सावधानीपूर्वक सांप को रेस्क्यू कर सुरक्षित बाहर निकाला। रेस्क्यू के बाद नवजोत सिंह ढिल्लों ने बताया कि यह इंडियन सैंड बोआ प्रजाति का सांप था, जिसे आमतौर पर दोमुंहा सांप कहा जाता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह सांप गैर-विषैला होता है।

पुलिस ने तीन मामलों में चार नशा तस्करों को किया गिरफ्तार, 43 ग्राम हेरोइन बरामद

फतेहाबाद। जिले में नशा तस्करों और असामाजिक तत्वों के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत पुलिस की अलग-अलग टीमों ने कार्रवाई करते हुए तीन अलग-अलग मामलों में कुल 43.44 ग्राम हेरोइन बरामद की है। इस दौरान पुलिस ने 3 नशा तस्करों को रंगे हाथों दबोचने के साथ-साथ सप्लाई नेटवर्क से जुड़े मुख्य आरोपी को भी हिसार से गिरफ्तार करने में सफलता पाई है। पहले मामले में पुलिस ने संदिग्ध अवस्था में घूम रहे प्रताप सिंह निवासी रविदास मोहल्ला, टोहाना को रोका। तलाशी लेने पर उसके कब्जे से 30.06 ग्राम हेरोइन बरामद हुई। पुलिस ने नशा सप्लाई नेटवर्क की कड़ियां जोड़ते हुए मुख्य सप्लायर सोनू पुत्र कर्मबीर, निवासी कौशिक नगर, हिसार को भी गिरफ्तार कर लिया। दूसरा मामला थाना शहर फतेहाबाद के अंतर्गत हुड्डा सेक्टर-3 पुलिस चौकी का है। चौकी प्रभारी ने बताया पुल की ओर से एक युवक पैदल आता दिखा, जो पुलिस को देखते ही अचानक मुडक़र तेज कदमों से भागने लगा। पुलिस टीम ने मुस्तैदी दिखाते हुए पीछा कर उसे दबोच लिया। आरोपी की पहचान अनुप पुत्र फुल सिंह, निवासी गांव डाटा, जिला हांसी के रूप में हुई। उसकी जींस की जेब से एक मोमी पाउच में 6.95 ग्राम हेरोइन बरामद हुई। तीसरी सफलता में थाना शहर टोहाना नया बस अड्डा टोहाना क्षेत्र था। इसी दौरान किला मोहल्ला टोहाना निवासी अजय उर्फ अज्जु पुत्र राजकुमार किसी ग्राहक को हेरोइन बेचने की फिराक में खड़ा है। सूचना पर तुरंत कार्रवाई करते हुए पुलिस टीम ने मौके पर दबिश दी और भागने का प्रयास कर रहे आरोपी अजय उर्फ अज्जु को काबू कर लिया। जब उसकी तलाशी ली गई तो उसकी कैपरी की जेब से 6.43 ग्राम हेरोइन मिली।

दुकानदार को झांसे में लेकर उड़ाई थी अंगूठी, सोनीपत का युवक गिरफ्तार

भट्टूकलां। थाना भट्टू कलां पुलिस ने अनोखे तरीके से दुकानदार को अपनी बातों में फंसाकर सोने की अंगूठी चोरी करने की वारदात का पर्दाफाश करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। थाना भट्टू कलां प्रभारी निरीक्षक वीर सिंह ने बताया कि 16 जुलाई को गांव बनगांव निवासी रमेश कुमार की शिकायत पर अज्ञात चोर के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया था। पीड़ित रमेश कुमार ने पुलिस को दी शिकायत में बताया था कि 23 मई की सुबह वह अपनी किराना दुकान पर मौजूद था। इसी दौरान एक अज्ञात व्यक्ति दुकान पर ग्राहक बनकर आया और उसने पहले करीब 4,400 का राशन व सामान खरीदा। इसके बाद शातिर आरोपी ने पूजा का सामान लेने का बहाना बनाया। उसने दुकानदार को झांसे में लेते हुए कहा कि पूजा का सामान देते समय हाथ में सोने की अंगूठी नहीं होनी चाहिए। उसकी बातों में आकर सीधे-साधे दुकानदार ने अपने हाथ से करीब 6.5 ग्राम वजनी सोने की अंगूठी निकालकर काउंटर पर रख दी। मौका पाते ही आरोपी ने दुकानदार को सब्जी लेने के बहाने दुकान के अंदर भेजा और खुद काउंटर से अंगूठी उठाकर रफूचक्कर हो गया। शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। पुलिस टीम ने घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली और तकनीकी साक्ष्यों व गुप्त सुरागों के आधार पर जांच को आगे बढ़ाया।

मिलिंग नीति से राइस मिल उद्योग में बढ़ी बेचैनी

50 लाख की सुरक्षा राशि, 150 प्रतिशत वसूली सख्त दंड और डिजिटल निगरानी से बढ़ी चिंताएं

हरिभूमि न्यूज. रानियां।

हरियाणा सरकार द्वारा खरीफ विपणन सत्र (केएमएस) 2026-27 के लिए जारी नई कस्टम मिलिंग नीति ने प्रदेश के राइस मिल उद्योग में व्यापक चर्चा छेड़ दी है और उद्योग में बेचैनी बढ़ा दी है। सरकार ने धान खरीद, कस्टम मिलिंग, परिवहन, भुगतान, भंडारण और सरकारी चावल की आपूर्ति व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, डिजिटल और जवाबदेह बनाने के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण और पहले की तुलना में अधिक सख्त प्रावधान लागू किए हैं। दूसरी ओर राइस मिल उद्योग से जुड़े लोगों का कहना है कि नीति के अनेक प्रावधान व्यवहारिक नहीं हैं। यदि इनमें समय रहते आवश्यक संशोधन नहीं किए गए तो आगामी मिलिंग सीजन उद्योग के लिए गंभीर आर्थिक और परिचालन संबंधी चुनौतियाँ लेकर आ सकता है।

नई नीति का सबसे बड़ा और सबसे चर्चित बदलाव सुरक्षा राशि में पांच गुना वृद्धि को माना जा रहा है। पहले जहां सामान्य श्रेणी के राइस मिलर्स को 10 लाख रुपए की सुरक्षा राशि जमा करनी पड़ती थी, वहीं अब इसे बढ़ाकर 50 लाख रुपए कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक एक टन अतिरिक्त मिलिंग क्षमता पर 5 लाख रुपए की अतिरिक्त सुरक्षा राशि जमा कराने का भी प्रावधान किया गया है। उद्योग का कहना है कि इससे बड़ी मात्रा में कार्यशील पूंजी लंबे समय तक फंस जाएगी, जिसका सीधा असर विशेष रूप से छोटे और मध्यम राइस मिलों की आर्थिक स्थिति पर पड़ेगा।

फर्स्ट इन-फर्स्ट आउट सिद्धांत चिंता का विषय

नीति में धान की मिलिंग पहले आया-पहले मिलिंग (फर्स्ट इन-फर्स्ट आउट) सिद्धांत के अनुसार करने का प्रावधान भी उद्योग के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। मिलर्स का कहना है कि बड़े भंडारण स्थलों पर अलग-अलग समय में आया धान विभिन्न स्थानों पर रखा जाता है। ऐसे में प्रत्येक स्थिति में इस व्यवस्था का पालन करना व्यवहारिक रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकता है, जिससे मिलिंग की गति और संचालन प्रभावित होने की आशंका है। सरकार ने इस बार पूरी मिलिंग प्रक्रिया को डिजिटल व्यवस्था से जोड़ने पर विशेष बल दिया है। नई नीति में डिफॉल्टर मिलर्स के विरुद्ध भी पहले की अपेक्षा कहीं अधिक कठोर प्रावधान किए गए हैं। धान अथवा चावल में अनियमितता, सरकारी स्टॉक में कमी, फर्जी खरीद या अन्य गंभीर उल्लंघन की स्थिति में सुरक्षा राशि जब्त करने, बैंक गारंटी भुनाने, बकाया राशि की 150 प्रतिशत तक वसूली, आवश्यकता पडने पर संपत्ति कुर्क करने, आपराधिक कार्रवाई करने तथा भविष्य में सरकारी खरीद एवं कस्टम मिलिंग प्रक्रिया से स्थायी रूप से बाहर करने जैसे प्रावधान उद्योग में चिंता का कारण बने हुए हैं।

बालियां छीनने वाले गिरोह का पर्दाफाश एक आरोपी को किया गिरफ्तार

सिरसा। पुलिस ने महिला के कानों से सोने की बालियां छीना-झपटी करने गिरोह के एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। ऐलनाबाद थाना प्रभारी प्रगट सिंह ने बताया कि बीते दिन बणी निवासी मुर्ति देवी ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि दोपहर करीब 3 बजे वह ऐलनबाद बस स्टैंड पर बस में बैठी थी। इस दौरान दो नौजवान युवक आए एक युवक बस में चढ़ा और उसके कानों की बालियां को झपटी मार कर तोड़ ली और मौका से बाइक लेकर दोनों मौका से फरार हो गए। उन्होंने बताया कि पीड़िता की शिकायत पर थाना ऐलनाबाद में छीना-झपटी का मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई। जांच के दौरान ऐलनाबाद थाना की एक पुलिस टीम ने महत्वपूर्ण सूचना के आधार पर कार्रवाई करते छीना-झपटी की वारदात में संलिप्त आरोपी मंगल सिंह निवासी खारा टिब्बी, जिला हनुमानगढ़ राजस्थान को चोरीशुदा बाइक सहित काबू कर लिया है। उन्होंने बताया कि आरोपी से पूछताछ कर उसके एक अन्य साथी की पहचान कर ली गई है, जिसे गिरफ्तार करने के लिए पुलिस लगातार दबिश दे रही है।

ऑल्टो की टक्कर से स्कूटी सवार की मौत

हरिभूमि न्यूज ▶▶फतेहाबाद

पुलिस ने क्षतिग्रस्त वाहनों को कब्जे में लेकर जांच शुरू की

मृतक बलदेव सिंह का फाइल फोटो

जिले के जाखल क्षेत्र में रफ्तार का कहर देखने को मिला है, जहां एक बेकाबू ऑल्टो कार ने इलेक्ट्रिक स्कूटी पर जा रहे किसान को सीधी टक्कर मार दी। इस भीषण हादसे में स्कूटी सवार किसान गंभीर रूप से घायल हो गया, जिसने हिसार के एक निजी अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। हादसे में टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि कार भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। पुलिस ने मृतक के परिजनों की शिकायत पर शनिवार को आरोपी कार चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है। पुलिस को दी शिकायत में गांव शकरपुरा की ढाणी लखुवाली निवासी सुखदेव सिंह ने बताया कि उनका 47 वर्षीय भतीजा बलदेव सिंह 23 जुलाई की शाम को अपनी इलेक्ट्रिक स्कूटी पर सवार होकर खेत की ओर जा रहा था। इसी दौरान रास्ते में एक तेज रफ्तार सफेद रंग की ऑल्टो कार के चालक ने गफलत और लापरवाही से कार चलाते हुए उनकी स्कूटी को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर लगते ही बलदेव सिंह उछलकर सडक़ पर जा गिरे और उन्हें गंभीर चोटें आईं। हादसे की सूचना मिलते ही परिजन तुरंत मौके पर पहुंचे और लहूलुहान हालत में पड़े बलदेव सिंह को आनन-फानन में निजी वाहन से हिसार के प्राइवेट अस्पताल ले गए। हालांकि, डॉक्टरों के अथक प्रयासों के बावजूद इलाज के दौरान बलदेव सिंह की मौत हो गई। घटना के बाद से ही मृतक के परिवार में कोहराम मचा हुआ है। मामले की जानकारी देते हुए जाखल थाना प्रभारी संजय कुमार ने बताया कि मृतक के चाचा सुखदेव सिंह के बयानों के आधार पर आरोपी ऑल्टो कार चालक के खिलाफ लापरवाही से वाहन चलाने और हत्या से इतर आपराधिक कृत्य का मामला दर्ज कर लिया गया है।

नशामुक्त प्रतियोगिता के लिए 27 तक करें आवेदन

सिरसा। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत युवाओं एवं आम नागरिकों को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने और स्वस्थ व सकारात्मक जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसी क्रम में युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत मेरा युवा भारत द्वारा नशा मुक्त युवा से विकसित भारत अभियान के तहत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। मेरा युवा भारत के जिला युवा अधिकारी धनपत ने बताया कि इन प्रतियोगिताओं का मुख्य उद्देश्य युवाओं में नशा मुक्ति के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा उनकी रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करना है। इच्छुक प्रतिभागी माई भारत के आधिकारिक पोर्टल पर जाकर अपना पंजीकरण कर सकते हैं। आवेदन एवं पंजीकरण की अंतिम तिथि 27 जुलाई निर्धारित की गई है।

ग्रामीणों का आरोप : निजी कार्यालयों में बैठ रहे पटवारी

राजस्व कार्यों में देरी से बढ़ी मुश्किलें

हरिभूमि न्यूज ▶▶भूना

उप तहसील कार्यालय परिसर में पटवार भवन उपलब्ध होने के बावजूद कई पटवारियों के अलग-अलग स्थानों पर बैठने से आम लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। नई पेपरलेस इंतकाल प्रणाली के तहत ओटीपी प्रक्रिया पूरी कराने के लिए लोगों को बार-बार इधर-उधर भटकना पड़ रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि इससे इंतकाल सहित अन्य राजस्व कार्य समय पर नहीं हो पा रहे हैं और लोगों का समय व पैसा दोनों व्यर्थ हो रहे हैं। ग्रामीण रामकुमार, जगदीश चंद्र, कृष्ण कुमार, सुभाष चंद्र, रामनिवास व राम सिंह ने उपायुक्त डॉ. विवेक भारती से मांग की है कि सभी पटवारियों की नियमित उपस्थिति उप तहसील कार्यालय स्थित पटवार भवन में सुनिश्चित की जाए, ताकि नागरिकों को एक ही स्थान पर समयबद्ध और पारदर्शी सेवाएं मिल सकें।

भूना। उपतहसील भवन।

घंटों करना पड़ रहा इंतजार

ग्रामीणों का आरोप है कि कई पटवारी शहर में निजी भवन किराये पर लेकर कामकाज कर रहे हैं, जबकि तहसील परिसर में पटवार भवन की पर्याप्त व्यवस्था मौजूद है। इसके बावजूद निजी स्थानों से इंतकाल और अन्य राजस्व कार्य किया जाना लोगों की सुविधा के विपरीत है। उन्होंने बताया कि पेपरलेस प्रणाली में ओटीपी लेने के लिए पटवारियों को उप तहसील कार्यालय आना पड़ता है। इस प्रक्रिया में देरी होने से आवेदकों को घंटों इंतजार करना पड़ता है और कई बार उन्हें बार-बार चक्कर लगाने पड़ते हैं।

श्याम संकीर्तन में उमड़ा जनसैलाब, अनिल शर्मा व रजनीश शर्मा के भजनों ने बांधा समां

देवशयनी एकादशी पर भक्ति में डूबा फतेहाबाद, गूंजते रहे बाबा श्याम के जयकारे

हरिभूमि न्यूज ▶▶फतेहाबाद

देवशयनी एकादशी के पावन अवसर पर शनिवार को तहसील चौक स्थित श्री श्याम मंदिर में श्रद्धा, आस्था और भक्ति का अद्भुत संगम देखने को मिला। सुबह से ही मंदिर में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। बाबा श्याम का मनमोहक श्रृंगार कर विशेष पूजा-अर्चना की गई तथा विधि-विधान से राजभोग आरती उतारी गई।

श्रद्धालुओं ने बाबा के दर्शन कर परिवार की सुख-समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य और खुशहाली की कामना की। पूरे दिन मंदिर परिसर 'हारे का सहारा, बाबा श्याम हमारा' के जयघोष से गुंजायमान रहा। शाम को संध्या आरती के बाद आयोजित विशाल श्याम संकीर्तन ने पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया। देवशयनी एकादशी पर शाम के समय भी मंदिरों में काफी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे और शिवलिंग पर बेलपत्र और काले तिल चढ़ाकर मन्नतें मांगी। मंदिर के पुजारी सोनू शर्मा और सूरज शर्मा ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पूजा-अर्चना संपन्न कराई। बाबा श्याम को छप्पन भोग अर्पित किया गया, जिसके बाद श्रद्धालुओं में प्रसाद वितरित किया गया। मंदिर को आकर्षक फूलों और रंग-बिरंगी रोशनी से सजाया गया था, जिससे पूरा परिसर दिव्य छटा बिखेर रहा था।

फतेहाबाद। कार्यक्रम में भजन प्रस्तुत करते अनिल शर्मा और श्री श्याम मंदिर में पूजा के लिए लगी भक्तों की लाइन।

देर रात तक चला भक्ति आयोजन

मंदिर समिति के प्रधान डॉ. सुभाष शर्मा ने बताया कि देवशयनी एकादशी के अवसर पर फतेहाबाद के अलावा आसपास के शहरों और गांवों से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु बाबा श्याम के दर्शन और संकीर्तन में शामिल होने पहुंचे। देर रात तक चले इस भक्ति आयोजन में श्रद्धालुओं ने नृत्य करते हुए बाबा के भजनों का आनंद लिया। कार्यक्रम के समापन पर सभी श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया गया। समिति के सदस्य भीम असीजा और डॉ. पावन हंसपाल ने बताया कि रविवार को शुक्ल पक्ष की द्वादशी के अवसर पर सुबह मंदिर में हवन-यज्ञ एवं विशेष पूजा-अर्चना का आयोजन किया जाएगा। प्रातः आरती के बाद श्रद्धालुओं को खीर का प्रसाद वितरित किया जाएगा, जबकि शाम को सभी श्याम भक्तों के लिए कढ़ी-चावल के विशाल लंगर की व्यवस्था रहेगी। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं से परिवार सहित कार्यक्रम में शामिल होकर बाबा श्याम का आशीर्वाद प्राप्त करने की अपील की।

पंडाल में गूंजे जयकारे

श्याम संकीर्तन में प्रसिद्ध भजन गायक अनिल शर्मा, रजनीश शर्मा और धीरज ने एक से बढक़र एक भजनों की प्रस्तुति देकर श्रद्धालुओं को भक्ति रस में सराबोर कर दिया। जैसे ही अनिल शर्मा ने भावपूर्ण अंदाज में 'श्याम बाबा श्याम बाबा तेरे पास आया हूं, चरणों में तेरे अरदास लाया हूं' भजन प्रस्तुत किया, पूरा पंडाल बाबा श्याम के जयकारों से गूंज उठा। इसके बाद रजनीश शर्मा ने 'सच्चा है दरबार तुम्हारा, संकट काटे हमारा, जब-जब भीड़ पड़ी भगवान तूने मेरी लाज बचाई है' भजन गाकर श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। वहीं धीरज की प्रस्तुतियों पर भी श्रद्धालु देर रात तक झूमते रहे और पूरा मंदिर परिसर श्याम नाम के संकीर्तन से गुंजायमान हो उठा।

पिछले कुछ वर्षों में भारत में व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) के प्रति लोगों का आकर्षण तेजी से बढ़ा है। छोटे शहरों और कस्बों के निवेशक भी अब म्यूचुअल फंड को बचत और निवेश का महत्वपूर्ण माध्यम मानने लगे हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म, आसान निवेश प्रक्रिया, वित्तीय जागरूकता और लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न की संभावनाओं ने म्यूचुअल फंड उद्योग को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। मिड और स्मॉल कैप फंडों में बढ़ती भागीदारी इसी बदलाव का परिणाम मानी जा रही है।

मिड और स्मॉल कैप फंडों पर निवेशकों का भरोसा कायम

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- *बाजार में उतार-चढ़ाव के बावजूद बन रहे पहली पसंद*
- *दो वर्षों में करोड़ों नए निवेशक जुड़े, दीर्घकालिक रिटर्न से बढ़ा विश्वास*
- *विशेषज्ञों ने ऊंचे वैल्यूएशन के बीच सतर्क निवेश की दी सलाह*

शेयर बाजार में पिछले दो वर्षों के दौरान कई बार तेज उतार-चढ़ाव देखने को मिला। वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं, भू-राजनीतिक तनाव, ब्याज दरों में बदलाव और घरेलू बाजार में समय-समय पर आई गिरावट के बावजूद भारतीय खुदरा निवेशकों का भरोसा मिड कैप और स्मॉल कैप म्यूचुअल फंडों पर लगातार मजबूत बना हुआ है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) के आंकड़ों का किया गया एक अहम विश्लेषण है। रिपोर्ट बताती है कि बाजार की अस्थिरता निवेशकों के उत्साह को कम नहीं कर सकी। इसके विपरीत, बड़ी संख्या में नए निवेशकों ने इन श्रेणियों में निवेश शुरू किया और पहले से निवेश कर रहे लोगों ने भी अपना निवेश जारी रखा। पोर्ट के अनुसार, जून 2024 से जून 2026 के बीच मिड कैप और स्मॉल कैप फंडों में खुदरा निवेशकों की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। जून 2024 में जहां मिड कैप फंडों के फोलियो की संख्या लगभग 1.53 करोड़ थी, वहीं जून 2026 तक यह बढ़कर 2.55 करोड़ हो गई। इसी अवधि में स्मॉल कैप फंडों के फोलियो 2.03 करोड़ से बढ़कर 2.87 करोड़ तक पहुंच गए। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि निवेशकों का रुझान केवल बड़े बाजार पूंजीकरण वाली कंपनियों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे बेहतर संभावनाओं वाली मध्यम और छोटी कंपनियों में भी निवेश के अवसर तलाश रहे हैं।

सभी ओपन-एंडेड इक्विटी फंड फोलियो का 32 प्रतिशत हिस्सा

आज मिड कैप और स्मॉल कैप फंड मिलकर देश के सभी ओपन-एंडेड इक्विटी म्यूचुअल फंड फोलियो का 32 प्रतिशत से अधिक हिस्सा बन चुके हैं। यह हिस्सा लगातार बढ़ रहा है, जो बताता है कि भारतीय निवेशकों की सोच अब लंबी अवधि के निवेश और संपत्ति निर्माण की ओर तेजी से बदल रही है। इस बढ़ते भरोसे के पीछे सबसे बड़ा कारण इन श्रेणियों का मजबूत दीर्घकालिक प्रदर्शन है। 30 जून 2026 तक के आंकड़ों के अनुसार, मिड कैप फंडों ने पिछले तीन वर्षों में 18.76 प्रतिशत का चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) और पांच वर्षों में 16.33 प्रतिशत का सीएजीआर दिया है। वहीं स्मॉल कैप फंडों ने तीन वर्षों में 17.68 प्रतिशत तथा पांच वर्षों में 17.06 प्रतिशत का सीएजीआर रिटर्न निवेशकों को उपलब्ध कराया।

उतार-चढ़ाव की संभावना ज्यादा

यह समझना जरूरी है कि अधिक रिटर्न के साथ जोखिम भी अधिक होता है। मिड और स्मॉल कैप कंपनियों के शेयरों में बड़े उतार-चढ़ाव की संभावना रहती है। यही कारण है कि बाजार में गिरावट आने पर इन श्रेणियों में नुकसान भी अपेक्षाकृत अधिक हो सकता है। इसके बावजूद निवेशकों का विश्वास इसलिए बना हुआ है क्योंकि वे अब अल्पकालिक उतार-चढ़ाव के बजाय दीर्घकालिक निवेश रणनीति को प्राथमिकता दे रहे हैं। निवेशकों का यह भरोसा केवल फोलियो की संख्या तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रबंधनाधीन परिसंपत्तियों में भी साफ दिखाई देता है। जून 2025 में मिड कैप फंडों का एयूएम 4.32 लाख करोड़ रुपये था, जो जून 2026 तक बढ़कर 5.06 लाख करोड़ रुपये हो गया। इसी तरह स्मॉल कैप फंडों का एयूएम 3.55 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 4.30 लाख करोड़ तक पहुंच गया।

निवेशक सतर्क रहें

आईसीआरए एनालाइस्टिक ने निवेशकों को सतर्क रहने की भी सलाह दी है। संस्था का कहना है कि वर्तमान समय में मिड और स्मॉल कैप शेयरों के वैल्यूएशन अपेक्षाकृत ऊंचे स्तर पर हैं। यदि आने वाले समय में कंपनियों की आय (कॉरपोरेट अर्निंग्स) बाजार की अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं बढ़ती है, तो इन श्रेणियों में करेक्शन देखने को मिल सकता है। ऐसे में निवेशकों को यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि पिछले वर्षों जैसा रिटर्न भविष्य में भी निश्चित रूप से मिलेगा। विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले वर्षों में इन फंडों का प्रदर्शन केवल वैल्यूएशन बढ़ने पर नहीं, बल्कि कंपनियों के वास्तविक कारोबार और मुनाफे में वृद्धि पर निर्भर करेगा।

क्या कहते हैं आंकड़े

वित्तीय सलाहकारों का सुझाव है कि मिड और स्मॉल कैप फंडों में निवेश हमेशा लंबी अवधि के लक्ष्य को ध्यान में रखकर करना चाहिए। एकमुश्त बड़ी राशि लगाने के बजाय नियमित एसआईपी के माध्यम से निवेश करना अपेक्षाकृत सुरक्षित रणनीति मानी जाती है। साथ ही निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो में लार्ज कैप, मिड कैप और स्मॉल कैप फंडों के बीच संतुलन बनाए रखना चाहिए, ताकि जोखिम और रिटर्न दोनों का बेहतर प्रबंधन किया जा सके।

कुल मिलाकर, एएमएफआई और आईसीआरए एनालाइस्टिक के ताजा आंकड़े यह संकेत देते हैं कि भारतीय खुदरा निवेशकों का भरोसा मिड और स्मॉल कैप फंडों पर पहले से अधिक मजबूत हुआ है। बेहतर दीर्घकालिक प्रदर्शन और नियमित निवेश ने इन श्रेणियों को लोकप्रिय बनाया है। हालांकि, ऊंचे वैल्यूएशन और संभावित बाजार उतार-चढ़ाव को देखते हुए निवेशकों को संयम, विविधीकरण और लंबी अवधि की रणनीति अपनाकर ही निवेश करना चाहिए। यही तरीका भविष्य में बेहतर और टिकाऊ संपत्ति निर्माण का आधार बन सकता है।

मृत्यु के बाद क्लेम होगा आसान

नॉमिनेशन व वसीयत अब भी जरूरी

सेबी ने एएमएफआई के मानकों में बदलाव कर दी बड़ी राहत | अब परिवारों को आर्थिक और मानसिक परेशानियां नहीं झेलनी होंगी | रिकॉर्ड में नाम की स्पेलिंग में मामूली अंतर होने से नहीं होगी दिक्कत

जानकारी
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वालों के लिए भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने एक महत्वपूर्ण और निवेशक हितैषी कदम उठाया है। निवेशक की मृत्यु के बाद उसके परिवार या कानूनी उत्तराधिकारियों को म्यूचुअल फंड यूनिट्स का ट्रांसमिशन (हस्तांतरण) कराने में अक्सर कई तरह की तकनीकी और दस्तावेजी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। पते में अंतर, नाम की स्पेलिंग अलग होना, हस्ताक्षर मेल न खाना या पुराने रिकॉर्ड जैसी छोटी-छोटी वजहों से क्लेम महीनों तक लंबित रहता था। कई मामलों में परिवारों को आर्थिक और मानसिक दोनों तरह की परेशानियां झेलनी पड़ती थीं। इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए सेबी ने एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) के मानकों में बदलाव कर ट्रांसमिशन प्रक्रिया को अधिक सरल, पारदर्शी और निवेशक-अनुकूल बनाने की दिशा में अहम कदम उठाया है। नए दिशा-निर्देशों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी निवेशक के निधन के बाद उसके परिवार को तकनीकी कारणों से अनावश्यक परेशान न होना पड़े।

पते में अंतर अब नहीं बनेगा बड़ी बाधा

पहले यदि म्यूचुअल फंड फोलियो में दर्ज पता और क्लेम के समय दिए गए दस्तावेजों का पता अलग होता था, तो एसेट मैनेजमेंट कंपनी (एएमसी) क्लेम रोक देती थी। अब वैध और अद्यतन दस्तावेजों के आधार पर नया पता स्वीकार किया जा सकेगा। इससे पुराने रिकॉर्ड के कारण होने वाली देरी काफी हद तक समाप्त होगी।

छोटी गलतियां भी होंगी स्वीकार

अक्सर पैन कार्ड, आधार, बैंक खाते और म्यूचुअल फंड रिकॉर्ड में नाम की स्पेलिंग में मामूली अंतर होने से ट्रांसमिशन अटक जाता था। अब आधार, पासपोर्ट जैसे सेल्फ-सर्टिफाइड दस्तावेजों के आधार पर ऐसे मामलों का समाधान किया जा सकेगा। हस्ताक्षर मेल न खाने की स्थिति में भी रजिस्ट्रार एंड ट्रांसफर एजेंट (आरटीए) निर्धारित प्रक्रिया के तहत समाधान करेंगे।

सभी एएमसी में एक जैसी प्रक्रिया

सेबी ने एएमएफआई को निर्देश दिया है कि सभी एसेट मैनेजमेंट कंपनियों और संबंधित कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया जाए, ताकि पूरे देश में ट्रांसमिशन प्रक्रिया एक समान तरीके से लागू हो। इससे निवेशकों को अलग-अलग फंड हाउस में अलग नियमों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

कौन क्लेम कर सकता है?

- क्लेम की प्रक्रिया इस बात पर निर्भर करती है कि निवेश किस प्रकार किया गया था।
- यदि निवेश संयुक्त नाम से है और एक निवेशक का निधन हो जाता है, तो जीवित धारक यूनिट्स अपने नाम कराने के लिए आवेदन कर सकता है।
- यदि निवेश एकल नाम से है और नॉमिनी दर्ज है, तो नॉमिनी ट्रांसमिशन के लिए आवेदन कर सकता है।
- यदि नॉमिनी नहीं है, तो कानूनी उत्तराधिकारी को उत्तराधिकार प्रमाणपत्र, लीगल हेयरशिप सर्टिफिकेट, वसीयत या अन्य आवश्यक दस्तावेजों के आधार पर दावा करना होगा। ऐसे मामलों में प्रक्रिया अपेक्षाकृत लंबी हो सकती है।

किन दस्तावेजों की होगी जरूरत?

■ ट्रांसमिशन रिक्वेस्ट फॉर्म ■ निवेशक का मृत्यु प्रमाणपत्र ■ पैन कार्ड ■ केवाईसी दस्तावेज ■ बैंक खाते का प्रमाण ■ यदि नॉमिनी नहीं है तो सक्सेशन सर्टिफिकेट, लीगल हेयरशिप सर्टिफिकेट, वसीयत या अन्य कानूनी दस्तावेज भी प्रस्तुत करने पड़ सकते हैं।

किन कारणों से अटकेगा क्लेम?

- नॉमिनी का नाम दर्ज न होना।
- केवाईसी अधूरा या पुराना होना।
- बैंक, पैन और म्यूचुअल फंड रिकॉर्ड में अलग-अलग जानकारी होना।
- कानूनी उत्तराधिकारियों के बीच विवाद।
- अलग-अलग एएमसी में कई फोलियो होने से दस्तावेजी प्रक्रिया जटिल होना।

आज ही करें ये चार काम

- पहला, हर म्यूचुअल फंड फोलियो में नॉमिनी अवश्य दर्ज करें और समय-समय पर उसकी समीक्षा करें।
- दूसरा, पैन, आधार, खाते और म्यूचुअल फंड रिकॉर्ड में नाम, जन्मतिथि, पता और अन्य विवरण समान रखें।
- तीसरा, यदि आपका निवेश बड़ा है तो केवल नॉमिनेशन पर निर्भर न रहें। एक विधिवत वसीयत तैयार करें। यह संपत्ति के अंतिम उत्तराधिकार को लेकर भविष्य के विवादों से बचाती है।
- चौथा, अपने परिवार को यह जानकारी अवश्य दें कि आपने किन-किन म्यूचुअल फंडों में निवेश किया है। कई बार परिवार को निवेश की जानकारी ही नहीं होती, जिससे वर्षों तक रकम बिना क्लेम के पड़ी रहती है।

नॉमिनी व उत्तराधिकारी में अंतर समझें

कई निवेशक यह मान लेते हैं कि नॉमिनी निवेश का अंतिम मालिक होता है, जबकि ऐसा हमेशा नहीं होता। नॉमिनी निवेश की राशि प्राप्त करने का अधिकृत व्यक्ति होता है। अंतिम स्वामित्व उत्तराधिकार कानून या वैध वसीयत के अनुसार तय होता है। बड़े निवेश वाले परिवारों के लिए एस्टेट प्लानिंग-वसीयत तैयार करना महत्वपूर्ण है।

निवेशक हित में बड़ा सुधार

सेबी का यह कदम ऐसे समय आया है, जब देश में म्यूचुअल फंड निवेशकों की संख्या लगातार बढ़ रही। करोड़ों निवेशक एसआईपी व अन्य योजनाओं के माध्यम से लंबी अवधि के लिए निवेश कर रहे हैं। ऐसे में निवेशक की मृत्यु के बाद परिवार को सरल- समयबद्ध तरीके से राशि मिलना वित्तीय व्यवस्था में विश्वास बढ़ाने के लिए आवश्यक है। सेबी के नए दिशा-निर्देश न केवल ट्रांसमिशन प्रक्रिया को तेज-पारदर्शी बनाएंगे, बल्कि निवेशकों में भरोसा मजबूत करेंगे कि उनकी मेहनत की कमाई जरूरत पड़ने पर बिना कानूनी बाधाओं के परिवार तक पहुंच सकेगी।

जानें जोखिम पोर्टफोलियो और टैक्स से जुड़े जरूरी नियम

सिर्फ रिटर्न नहीं, इन पैमानों पर चुनें सही म्यूचुअल फंड

अलर्ट
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड आज करोड़ों भारतीयों की निवेश यात्रा का अहम हिस्सा बन चुके हैं। सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए हर महीने छोटी-छोटी रकम निवेश कर लंबी अवधि में बड़ा फंड तैयार किया जा सकता है। लेकिन बाजार में हजारों म्यूचुअल फंड योजनाएं उपलब्ध होने के कारण सबसे बड़ी चुनौती सही फंड का चुनाव करना है। अक्सर निवेशक पिछले एक साल का रिटर्न या पांच स्टार रेटिंग देखकर फैसला ले लेते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि यही सबसे बड़ी भूल साबित हो सकती है। दरअसल, किसी भी म्यूचुअल फंड का मूल्यांकन केवल रिटर्न के आधार पर नहीं किया जा सकता। फंड का जोखिम, खर्च, पोर्टफोलियो, फंड मैनेजर और निवेश का उद्देश्य जैसे कई पहलू भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। यदि दो फंडों में से किसी एक को चुनना है, तो कुछ बुनियादी मानकों को समझना बेहद जरूरी है।

सबसे पहले एक जैसी श्रेणी के फंड की तुलना करें

किसी भी तुलना की शुरुआत सही आधार से होनी चाहिए। यदि एक फंड लार्ज कैप है और दूसरा मिड कैप, तो दोनों की तुलना करना उचित नहीं होगा। दोनों का निवेश उद्देश्य, जोखिम और संभावित रिटर्न अलग-अलग होते हैं। यदि आपका लक्ष्य स्थिरता और अपेक्षाकृत कम जोखिम है, तो लार्ज कैप फंडों की तुलना करें। यदि अधिक जोखिम लेकर लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न चाहते हैं, तो मिड कैप- स्मॉल कैप श्रेणी के भीतर विकल्प चुनें।

डायरेक्ट-रेगुलर प्लान में अंतर

हर म्यूचुअल फंड में निवेश के दो विकल्प होते हैं—डायरेक्ट और रेगुलर। डायरेक्ट प्लान में निवेशक सीधे एसेट मैनेजमेंट कंपनी (एएमसी) के माध्यम से निवेश करता है। इसमें किसी एजेंट का कमीशन नहीं होता, इसलिए एक्सपेंस रेशियो कम रहता है और लंबे समय में बेहतर रिटर्न मिलने की संभावना रहती है। रेगुलर प्लान उन निवेशकों के लिए उपयुक्त हो सकता है जिन्हें वित्तीय सलाहकार की सहायता की जरूरत होती है।

केवल रिटर्न नहीं, एक्सपेंस रेशियो भी देखें

दो फंड यदि लगभग समान रिटर्न दे रहे हैं, तो कम एक्सपेंस रेशियो वाला फंड बेहतर माना जाता है। एक्सपेंस रेशियो वह वार्षिक शुल्क है जो एएमसी आपके निवेश के प्रबंधन के बदले लेती है। देखने में यह अंतर छोटा लग सकता है, लेकिन 15-20 वर्षों की लंबी अवधि में यही अंतर लाखों रुपये के अतिरिक्त रिटर्न में बदल सकता है।

दोनों फंड किन कंपनियों में निवेश कर रहे हैं

कई निवेशक अलग-अलग फंड खरीद लेते हैं, लेकिन बाद में पता चलता है कि दोनों की शीर्ष 10 होल्डिंग लगभग एक जैसी हैं। निवेश से पहले दोनों फंडों की प्रमुख होल्डिंग और सेक्टर एलोकेशन अवश्य देखें। जोखिम के मुकाबले रिटर्न का मूल्यांकन करें। हर अधिक रिटर्न देने वाला फंड बेहतर नहीं होता।

रिश्ते में प्यार के साथ पैसों की समझ भी जरूरी

पति-पत्नी की कमाई में बड़ा-अंतर हो तो कैसे बनाएं फाइनेंशियल प्लान

बिजनेस डेस्क। शादी केवल दो लोगों का भावनात्मक रिश्ता नहीं, बल्कि दो आर्थिक जिम्मेदारियों का भी मिलन है। आज के दौर में बड़ी संख्या में पति-पत्नी दोनों कामकाजी हैं, लेकिन अक्सर उनकी आय समान नहीं होती। किसी की सैलरी अधिक होती है तो कोई अपेक्षाकृत कम कमाता है। ऐसे में बड़ा सवाल यह होता है कि घर का खर्च कैसे बांटा जाए, ताकि न किसी एक पर आर्थिक बोझ बढ़े और न रिश्ते में असंतुलन पैदा हो। वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि सफल वैवाहिक जीवन की नींव केवल भरोसे और प्यार पर नहीं, बल्कि पारदर्शी वित्तीय योजना पर भी टिकी होती है। पैसों को लेकर स्पष्ट समझ और नियमित संवाद भविष्य के विवादों से बचाता है। दोनों को आर्थिक रूप से सुरक्षित महसूस कराता है।

हर परिवार के लिए एक जैसा फॉर्मूला नहीं

फाइनेंशियल प्लानिंग का कोई सार्वभौमिक नियम नहीं होता। हर परिवार की आय, जिम्मेदारियां, जीवनशैली और भविष्य के लक्ष्य अलग-अलग होते हैं। किसी दूसरे का मॉडल अपनाने के बजाय अपनी परिस्थितियों के अनुसार वित्तीय व्यवस्था बनाना समझदारी है। महत्वपूर्ण बात यह है कि कोई भी निर्णय दोनों की सहमति और सुविधा से लिया जाए। आर्थिक मामलों में पारदर्शिता रिश्ते को मजबूत बनाती है।

क्या आधा-आधा खर्च बांटना सही है?

कई दंपती यह मान लेते हैं कि सभी खर्च 50-50 प्रतिशत बांट देना बराबरी का सबसे अच्छा तरीका है। लेकिन यह हर स्थिति में उचित नहीं होता। मान लीजिए पति की मासिक आय 1.50 लाख और पत्नी 50,000 रुपये कमाती हैं। यदि दोनों 40-40 हजार घर के खर्च में दें, तो पत्नी की आय का बड़ा हिस्सा खर्च हो जाएगा, जबकि पति के पास बचत और निवेश के लिए पर्याप्त राशि बची रहेगी। ऐसी व्यवस्था आर्थिक रूप से संतुलित नहीं मानी जाती क्योंकि इससे कम आय वाले साथी पर अपेक्षाकृत अधिक दबाव पड़ता है।

आय के अनुपात में खर्च बांटना बेहतर विकल्प

वित्तीय विशेषज्ञों के अनुसार यदि पति-पत्नी की आय में बड़ा अंतर है तो खर्च भी आय के अनुपात में बांटना अधिक व्यावहारिक होता है। उदाहरण के लिए यदि एक साथी कुल आय का 70 प्रतिशत कमाता है और दूसरा 30 प्रतिशत, तो साझा खर्चों में योगदान भी लगभग उसी अनुपात में रखा जा सकता है। इस व्यवस्था से दोनों के पास बचत, निवेश और व्यक्तिगत जरूरतों के लिए पर्याप्त धन बचता है।

जॉइंट अकाउंट हो सकता है अच्छा समाधान

- आज कई कामकाजी दंपती साझा खर्चों के लिए जॉइंट बैंक अकाउंट का विकल्प अपना रहे हैं।
- इस व्यवस्था में दोनों अपनी आय का एक तय हिस्सा संयुक्त खाते में जमा करते हैं। इसी खाते से घर का किराया, ईएमआई, राशन, बिजली-पानी, बच्चों की फीस और अन्य साझा खर्च पूरे किए जाते हैं। वहीं शेष राशि दोनों अपने व्यक्तिगत खातों में रखते हैं, जिससे उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता भी मिलती है। इससे न तो हर छोटे खर्च का हिसाब देना पड़ता है और न ही वित्तीय तनाव बढ़ता है।

बचत और निवेश की भी संयुक्त रणनीति बनाएं

घर का बजट केवल खर्च तक सीमित नहीं होना चाहिए। पति-पत्नी को मिलकर भविष्य के वित्तीय लक्ष्य तय करने चाहिए। इनमें आपातकालीन फंड, बच्चों की शिक्षा, घर खरीदने, रिटायरमेंट फंड, स्वास्थ्य बीमा, जीवन बीमा, म्यूचुअल फंड एसआईपी और अन्य निवेश शामिल हो सकते हैं। दोनों नियमित निवेश करते हैं, तो आर्थिक सुरक्षा मजबूत होती है।

पैसों पर खुलकर बात करना जरूरी

भारतीय परिवारों में अक्सर पैसों को लेकर खुलकर चर्चा नहीं होती। यही भविष्य में गलतफहमियों और विवादों का कारण बन सकता है। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि पति-पत्नी को अपनी आय, खर्च, कर्ज, निवेश और भविष्य की योजनाओं पर नियमित रूप से बातचीत करनी चाहिए।

इन गलतियों से बचें

- एक-दूसरे से आय या कर्ज की जानकारी छिपाना।
- बिना चर्चा के बड़े वित्तीय फैसले लेना।
- केवल एक व्यक्ति पर पूरे परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी डाल देना।
- आपातकालीन फंड न बनाना।
- बीमा और निवेश को नजरअंदाज करना।
- हर खर्च का अत्यधिक हिसाब से तनाव पैदा करना।

एसआईपी और एसडब्ल्यूपी की स्मार्ट रणनीति से रिटायरमेंट के बाद मिल सकती है नियमित आय

1,000 रुपये की एसआईपी से बन सकता 1 करोड़ का रिटायरमेंट फंड

हर वर्ष 10% बढ़ाएं एसआईपी कंपाउंडिंग की ताकत से तैयार होगा बड़ा कॉर्पस

बिजनेस डेस्क

रिटायरमेंट के लिए बड़ा फंड बनाने के लिए हमेशा मोटी सैलरी होना जरूरी नहीं है। वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि यदि निवेशक कम उम्र में नियमित निवेश शुरू करे, हर साल निवेश बढ़ाता रहे और लंबी अवधि तक अनुशासन बनाए रखे, तो छोटी-सी एसआईपी भी करोड़ों रुपये का रिटायरमेंट फंड तैयार कर सकती है। इसके बाद उसी फंड से सिस्टेमैटिक विदड्रॉल प्लान (एसडब्ल्यूपी) के जरिए हर महीने नियमित आय भी प्राप्त की जा सकती है। दरअसल, एसआईपी और एसडब्ल्यूपी एक-दूसरे के पूरक हैं। जहां एसआईपी नौकरी के दौरान धीरे-धीरे संपत्ति बनाने का माध्यम है, वहीं एसडब्ल्यूपी रिटायरमेंट के बाद उसी संपत्ति को नियमित मासिक आय में बदलने का तरीका है। यदि दोनों का सही तरीके से उपयोग किया जाए तो व्यक्ति बिना आर्थिक तनाव के रिटायरमेंट का जीवन बिता सकता है।

कैसे काम करती है एसआईपी+ एसडब्ल्यूपी रणनीति

मान लीजिए कोई व्यक्ति 28 वर्ष की उम्र में नौकरी शुरू करता है और हर महीने केवल 1,000 की एसआईपी शुरू करता है। वह अपनी आय बढ़ने के साथ हर साल एसआईपी की राशि में 10 प्रतिशत की बढ़ोतरी करता है और 60 वर्ष की उम्र तक लगातार निवेश करता रहता है।

इस उदाहरण से समझें

- निवेश शुरू करने की आयु : 28 वर्ष
- शुरुआती एसआईपी : 1,000 प्रति माह
- हर साल एसआईपी में बढ़ोतरी : 10%
- अनुमानित वार्षिक रिटर्न : 12%
- निवेश अवधि : 32 वर्ष

यह भी जानें

- कुल निवेश : 24.13 लाख रुपये
- अनुमानित फंड : 1.05 करोड़ रुपये
- कुल लाभ : लगभग 80.98 लाख रुपये
- यानी निवेशक ने करीब 24 लाख रुपये जमा किए, लेकिन कंपाउंडिंग और नियमित निवेश बढ़ाने की वजह से रिटायरमेंट तक उसका फंड एक करोड़ रुपये से अधिक हो गया।

असली ताकत है स्टेप अप एसआईपी

इस उदाहरण की सबसे महत्वपूर्ण बात 1,000 रुपये की शुरुआती एसआईपी नहीं, बल्कि हर साल उसमें 10 प्रतिशत की बढ़ोतरी है। अधिकांश लोगों की आय समय के साथ बढ़ती है। यदि वे हर साल अपनी एसआईपी भी बढ़ाते रहें तो बिना अतिरिक्त आर्थिक दबाव के बड़ी पूंजी तैयार की जा सकती है। यदि एसआईपी की राशि पूरे 32 वर्षों तक 1,000 रुपये ही रखी जाए तो एक करोड़ रुपये का लक्ष्य हासिल करना बेहद मुश्किल होगा। इसलिए हर वेतन वृद्धि के साथ एसआईपी बढ़ाने की आदत लंबी अवधि में लाखों रुपये का अतिरिक्त लाभ दिला सकती है।

क्या 12% रिटर्न की उम्मीद वाजिब है?

- इस उदाहरण में 12 प्रतिशत वार्षिक रिटर्न केवल गणना के लिए लिया गया है। यह कोई गारंटीड रिटर्न नहीं है।
- हालांकि पिछले कई वर्षों के आंकड़े बताते हैं कि फ्लेक्सी कैप, मल्टी कैप, लार्ज एंड मिडकैप और कई इक्विटी म्यूचुअल फंड्स ने लंबी अवधि में लगभग इसी स्तर या इससे अधिक का औसत रिटर्न दिया है। हालांकि बाजार जोखिम हमेशा बना रहता है और किसी भी वर्ष रिटर्न कम या ज्यादा हो सकता है।

रिटायरमेंट बाद कैसे मिलेगी हर माह आय

रिटायरमेंट के बाद सबसे बड़ी चुनौती होती है नियमित आय का स्रोत बनाए रखना। यही काम एसडब्ल्यूपी करता है। मान लीजिए रिटायरमेंट के समय निवेशक के पास 1.50 करोड़ रुपये का फंड है और वह इसे किसी मीडियम ड्यूरेशन डेट फंड या कंजर्वेटिव हाइब्रिड फंड में निवेश करता है।

यदि निम्नलिखित मान्यताएं ली जाएं

- निवेश राशि : 1.50 करोड़ रुपये
- अनुमानित वार्षिक रिटर्न : 6%
- मासिक निकासी : 1 लाख
- निकासी अवधि : 12 वर्ष
- इस अवधि में कुल निकासी : 1.44 करोड़ रुपये
- निकासी के दौरान अर्जित लाभ: लगभग 43.13 लाख रुपये
- 12 वर्ष बाद बची राशि : लगभग 4.13 लाख रुपये
- इस तरह निवेशक पूरे 12 वर्षों तक हर महीने 1 लाख प्राप्त कर सकता है, जबकि शेष राशि निवेशित रहकर रिटर्न भी अर्जित करती रहती है।

एसडब्ल्यूपी क्यों है बेहतर विकल्प

यदि रिटायरमेंट के समय पूरी राशि एक साथ निकाल ली जाए तो उसके जल्दी खत्म होने का खतरा रहता है। इसके विपरीत एसडब्ल्यूपी में केवल जरूरत के अनुसार हर महीने निश्चित राशि निकाली जाती है और बाकी पैसा निवेशित रहता है। इससे फंड अधिक समय तक चलता है और नियमित आय भी मिलती रहती है।

विशेषज्ञों के अनुसार एसडब्ल्यूपी पारंपरिक पेंशन की तरह नियमित नकदी प्रवाह उपलब्ध कराने का प्रभावी माध्यम बन सकता है।

किन बातों का रखें ध्यान

- इक्विटी में 12% और डेट फंड में 6% रिटर्न की कोई गारंटी नहीं होती।
- रिटायरमेंट के नजदीक आते समय पोर्टफोलियो में जोखिम धीरे-धीरे कम करना चाहिए।
- महंगाई को ध्यान में रखते हुए रिटायरमेंट फंड का लक्ष्य तय करें।
- एसडब्ल्यूपी की मासिक राशि अपने खर्च और उपलब्ध कॉर्पस के अनुसार निर्धारित करें।
- समय-समय पर निवेश की समीक्षा करते रहें।

ऐसे समझें पूरा गणित

एसआईपी चरण

●शुरुआत : 28 वर्ष की आयु ●मासिक एसआईपी : 1,000 रुपये ●हर साल बढ़ोतरी : 10% ●अवधि : 32 वर्ष ●अनुमानित रिटर्न : 12% ●कुल निवेश : 24.13 लाख रुपये ●अनुमानित फंड : 1.05 करोड़ रुपये

एसडब्ल्यूपी चरण

● शुरुआती फंड : 1.50 करोड़ रुपये ● अनुमानित रिटर्न : 6% ●मासिक निकासी : 1 लाख रुपये ●अवधि : 12 वर्ष ●कुल निकासी : 1.44 करोड़ रुपये

खबर संक्षेप

मोटर चोरी का खुलासा दो आरोपी गिरफ्तार

सिरसा। पुलिस ने गांव रत्ताखेड़ा के तालाब से मोटर चोरी करने वाले दो आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से चोरीशुदा मोटर भी बरामद कर ली है। एवीबीटी स्टाफ सिरसा पुलिस टीम के प्रभारी ने बताया कि गांव रत्ताखेड़ा निवासी सुखविंदर सिंह ने ऐलनाबाद थाना में पुलिस को दी शिकायत में बताया कि गांव के जोहड़ से पानी निकालने के लिए लगी मोटर 22 जुलाई की रात अज्ञात युवक चोरी कर ले गए। शिकायत के आधार पर थाना ऐलनाबाद में चोरी का मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई। जांच के दौरान पुलिस ने तकनीकी साक्ष्यों और मुखबिर की सूचना के आधार पर गांव रत्ताखेड़ा निवासी गुरचरण सिंह तथा बलराज को गिरफ्तार कर लिया।

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में टीम ओरेकल रही प्रथम

भूना। शांति निकेतन स्कूल, भूना में विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वरिष्ठ वर्ग की सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का शुभारंभ स्कूल निदेशक जसबीर बेनीवाल ने सरस्वती माता के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। प्रतियोगिता में सामान्य ज्ञान, आवाज पहचानो, इतिहास, अंग्रेजी, गणित, हिंदी, विज्ञान, खेल और राजनीति विषयों से जुड़े कुल नौ राउंड आयोजित किए गए। इसमें पांच टीमों ने भाग लिया और प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिभा व ज्ञान का शानदार प्रदर्शन किया। कड़े मुकाबले के बाद टीम ओरेकल ने प्रथम तथा टीम गैलेक्सी ने द्वितीय स्थान हासिल किया। प्रतियोगिता में अनंत, अर्पिता, रौनक, मंजीत, पायल, आयुष, अंकित, गीतेश, प्रत्यक्ष, चाहत, हर्ष, जतिन, आर्यन और कोमल सहित अन्य विद्यार्थियों ने भाग लिया।

वूमेन चैरिटी क्लब का रक्तदान शिविर आज

फतेहाबाद। वूमेन चैरिटी क्लब, ग्रीन पार्क फतेहाबाद की ओर से रविवार, 26 जुलाई को रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। शिविर का आयोजन ग्रीन पार्क स्थित वैष्णो माता मंदिर परिसर में सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक किया जाएगा। क्लब की ओर से आयोजित इस रक्तदान शिविर का उद्देश्य जरूरतमंद मरीजों के लिए रक्त उपलब्ध कराने के साथ-साथ लोगों को स्वैच्छिक रक्तदान के प्रति जागरूक करना है। क्लब ने अधिक से अधिक लोगों से रक्तदान कर मानव सेवा के इस महायज्ञ में भाग लेने की अपील की है। आयोजकों ने बताया कि रक्तदान किसी भी जरूरतमंद व्यक्ति को नया जीवन देने का माध्यम है। उन्होंने कहा कि 'एक बूंद रक्त किसी की जिंदगी की आस बन सकती है।'

एमएम कॉलेज में 'नशामुक्त युवा फॉर विकसित भारत' कार्यक्रम

युवाओं ने लिया नशे से दूर रहकर राष्ट्र निर्माण में योगदान का संकल्प

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

फतेहाबाद। एमएम कॉलेज में नशे से दूर रहकर राष्ट्र निर्माण में योगदान का संकल्प लेते विद्यार्थी व स्टाफ सदस्य। फोटो: हरिभूमि

युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में मनोहर मेमोरियल पीजी कॉलेज के अमरजीत कौर सेमिनार हॉल में 'नशामुक्त युवा फॉर विकसित भारत' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस विशेष कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य युवा पीढ़ी को नशे की सामाजिक बुराई से दूर रखकर राष्ट्र के सर्वांगीण विकास एवं 'विकसित भारत 2047' के सपने को साकार करने में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना रहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करते हुए एमएम एजुकेशन सोसायटी के प्रधान राजीव बत्रा ने उपस्थित युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि युवा किसी भी देश की रीढ़ की हड्डी और ऊर्जा का स्रोत होते हैं। आज भारत विश्व का सबसे युवा देश है, इसलिए यदि हमारी युवा शक्ति सही दिशा में अग्रसर होगी तो देश को विश्वगुरु बनने से कोई नहीं रोक सकता। उन्होंने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि वे नशे जैसी घातक लत से पूरी तरह दूर रहें, क्योंकि नशा न केवल शरीर और भविष्य को बर्बाद करता है बल्कि पूरे परिवार तथा समाज की नींव को कमजोर करता है। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के फील्ड ऑफिसर मनोज कुमार ने सफल आयोजन पर कॉलेज प्रशासन को बधाई दी। मंत्रालय द्वारा डॉ.विकेश सेठी को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया था। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के तौर पर यमुनानगर से पहुंची हरियाणा यूथ आइकॉन अंशिका कथूरिया ने सपरिवार भाग लिया। विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद जिला यूथ ऑफिसर रीना केसरिया ने युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा चलाई जा रही विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं एवं उपक्रमों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि प्रत्येक युवा को केंद्र सरकार के 'माय भारत' पोर्टल पर अपना पंजीकरण अवश्य करवाना चाहिए। विशिष्ट अतिथि के तौर पर देशभर में 12वीं कॉमर्स टॉपर रही काव्या चौधरी ने भाग लिया।

केलनियां में निकाली नशा छोड़ो रैली

सिरसा। नेशनल कॉलेज ऑफ एजुकेशन के रेड रिबन क्लब द्वारा एनसीडीओआरडी अभियान के अंतर्गत गांव केलनियां में नशा छोड़ो रैली एवं डोर-टू-डोर जनजागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। कॉलेज प्राचार्या डॉ. पूनम मिगलानी ने कहा कि इस अभियान का उद्देश्य युवा एवं आम नागरिकों को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करना तथा नशामुक्त समाज के निर्माण के लिए प्रेरित करना है। इस विशेष अभियान के अंतर्गत रैली के दौरान विद्यार्थियों ने हाथों में जागरूकता तख्तियां एवं बैनर लेकर नशा छोड़ो जीवन जोड़ो, नशा मुक्त भारत, स्वस्थ भारत तथा युवा को बचाना है, नशे को मिटाना है जैसे प्रेरणादायक नारों के माध्यम से ग्रामीणों को नशे से दूर रहने का संदेश दिया। रैली के उपरांत गांव की सरपंच अंजू बाला, पंच, विद्यार्थियों एवं शिक्षकगण ने गांव केलनियां में डोर-टू-डोर जागरूकता अभियान चलाया। उन्होंने घर-घर जाकर ग्रामीणों से संवाद किया तथा नशीले पदार्थों के सेवन से होने वाले शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक दुष्प्रभावों की जानकारी दी। साथ ही युवाओं को शिक्षा खेल एवं सकारात्मक गतिविधियों से जोड़ने तथा समाज को नशामुक्त बनाने में सहयोग देने का आह्वान किया। इस अवसर पर ग्रामीणों ने भी नशे के विरोध जन जागरूकता फैलाने एवं अपने गांव को नशामुक्त बनाने का संकल्प लिया। इस कार्यक्रम का सफल आयोजन रेड रिबन क्लब की इंचार्ज डॉ. वंदना रानी के द्वारा किया गया।

सिरसा। गांव केलनियां में नशा छोड़ो रैली निकालकर ग्रामीणों को किया जागरूक।

एसपीएस अस्पताल में लगाया रक्तदान व चिकित्सा शिविर

सिरसा। शिविर में रक्तदान करते हुए लोग। फोटो: हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

सतगुरु प्रताप सिंह अस्पताल में शनिवार को रक्तदान शिविर के साथ-साथ चिकित्सा जांच शिविर भी आयोजित किया गया। यूनिट हैड शशिरंजन ने बताया कि सुबह 10 बजे रक्तदान शिविर शुरू किया गया, जिसमें करीब 33 लोगों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया। वरदान चैरिटेबल ट्रस्ट की टीम ने रक्त का संग्रहण किया। यूनिट हैड शशिरंजन ने कहा कि रक्त का कोई दूसरा विकल्प नहीं है। हमारे द्वारा दिया गया रक्त किसी मरते हुए इंसान को नया जीवन दे सकता है। यह केवल एक दान नहीं, बल्कि मानवता के प्रति हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य है। शिविर के दौरान डॉक्टरों ने लोगों को यह भी समझाया कि रक्तदान करने से शरीर में कोई कमजोरी नहीं आती, बल्कि इससे स्वास्थ्य बेहतर रहता है और नया रक्त बनता है। उन्होंने आमजन से आह्वान किया कि प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति साल में कम से कम दो बार रक्तदान अवश्य करे। अंत में सभी रक्तदाताओं को जूस, फल और ऊर्जावर्धक खाद्य पदार्थ दिए गए। अस्पताल की ओर से सभी डोनर्स को सर्टिफिकेट और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। आयोजकों ने शिविर को सफल बनाने के लिए सभी डॉक्टरों, स्टाफ और रक्तवीरों का दिल से आभार व्यक्त किया।

खास बातें

- यूनिट हैड शशिरंजन ने बताया कि सुबह 10 बजे रक्तदान शिविर शुरू किया
- करीब 33 लोगों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया, वरदान चैरिटेबल ट्रस्ट की टीम ने रक्त का संग्रहण किया

नागरिक अस्पताल के रिनोवेशन में अनियमितताओं का आरोप

सिटी वेलफेयर क्लब ने डीसी को पत्र लिख उठाई आवाज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

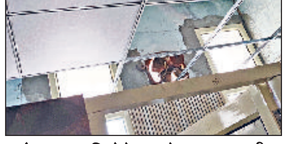

फतेहाबाद। रिनोवेशन में बाथरूम की छत नीची कर दी गई व एग्जास्ट ऊपर रह गया है। फोटो: हरिभूमि

नागरिक अस्पताल में इन दिनों चल रहे रिनोवेशन के कार्यों में गंभीर अनियमितताओं और कमियों का मामला सामने आया है। सामाजिक संस्था सिटी वेलफेयर क्लब ने इन कमियों को उजागर करते हुए जिला उपायुक्त को एक पत्र भेजा है। संस्था ने अस्पताल परिसर में मरीजों, उनके परिजनों और आमजन के लिए बेहतर सुविधाएं सुनिश्चित करने तथा सार्वजनिक धन का समुचित सदुपयोग करने की मांग की है। क्लब के अध्यक्ष विनोद अरोड़ा ने बताया कि यद्यपि अस्पताल के नवीनीकरण की पहल सराहनीय है, लेकिन योजना निर्माण में कई महत्वपूर्ण खामियां छोड़ दी गई हैं। उन्होंने कहा कि अस्पताल परिसर के पीछे स्थित पार्कों का तो जीर्णोद्धार कर दिया गया है, जबकि मुख्य प्रवेश द्वार के ठीक सामने स्थित पार्क आज भी बदहाली और जर्जर अवस्था में पड़ा है। क्लब ने मांग की है कि मुख्य पार्क में घास लगाकर और पौधे रोपकर इसका सौंदर्यकरण किया जाए। अस्पताल के इंफ्रास्ट्रक्चर पर सवाल उठाते हुए विनोद अरोड़ा ने कहा कि प्रथम और द्वितीय मंजिल की गैलरियों में सीधे शीशे जड़ दिए गए हैं। इससे प्राकृतिक हवा का आवागमन पूरी तरह बाधित हो गया है। गर्मी और उमस के दिनों में इससे मरीजों और तीमारदारों को भारी घुटन का सामना करना पड़ेगा। संस्था ने मांग की है कि शीशों के स्थान पर पूर्व की भांति लोहे की जालियां और खिड़कियां लगाई जाएं ताकि समुचित वेंटिलेशन बना रहे।

क्लब ने शौचालयों की स्थिति पर भी गहरी चिंता जताई है।

धूमधाम से मनाया चांदनी दशमी उत्सव

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

फतेहाबाद। रामदेव मंदिर में पूजा अर्चना करते श्रद्धालु।

शक्ति नगर स्थित प्राचीन बाबा रामदेव मंदिर रामदेवरा में आषाढ़ मास की चांदनी दशमी के पावन उपलक्ष्य में धार्मिक उत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्रद्धालुओं ने बाबा रामदेव महाराज की आरती में भाग लिया और गगनभेदी जयकारों से संपूर्ण मंदिर परिसर भक्तिमय हो उठा। उत्सव का शुभारंभ मंदिर रामदेवरा समिति के प्रधान रमेश जोइया व अन्य सदस्यों द्वारा बाबा रामदेव महाराज की प्रतिमा पर पुष्पमाला अर्पित कर और सांची जोत प्रज्ज्वलित करके किया गया। इसके उपरांत बाबा रामदेव जी को चूरमा, हलवा, खीर, मिष्ठान, मेवे और बताशे का भव्य छप्पन भोग लगाया गया, जिसे बाबा रामदेव महाराज हो भोग लगाकर श्रद्धालुओं में प्रसाद स्वरूप वितरित किया गया। इस मौके पर जोनी गहलोत, राकेश जोइया, नमन मोंगा, मनोज चायल, सीता राम गहलोत, प्यारे लाल डाबी, सुभाष गहलोत, आर्यन आहुजा, राहुल गहलोत, जश्र सेठी, हार्दिक आहुजा, सोनू शर्मा, दीपक कुमार आदि मौजूद रहे।

ब्लॉक स्तरीय खेलों में ऋग्वेदा स्कूल के खिलाड़ी छाए

चोपटा। गांव दड़बा कलां में आयोजित ब्लॉक स्तरीय स्कूली खेलकूद प्रतियोगिता में ऋग्वेदा पब्लिक स्कूल शक्कर मंदोरी के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए विभिन्न स्पर्धाओं में कई स्वर्ण एवं रजत पदक अपने नाम किए। विद्यार्थियों की इस उपलब्धि से विद्यालय परिसर में खुशी का माहौल है। प्रतियोगिता में कुश्ती अंडर-14 वर्ग में हिमांशु, नव्या और कोशिका ने प्रथम स्थान हासिल किया। वहीं अंडर-17 वर्ग में आशीष, भावना और अनिशा ने भी स्वर्ण पदक जीतकर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। एथलेटिक्स प्रतियोगिता में अर्पित ने शॉटपुट में द्वितीय तथा अनुमित ने डिस्क थ्रो में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। बैडमिंटन डबल्स अंडर-14 वर्ग में रोहित और मुकेश ने द्वितीय स्थान हासिल किया, जबकि अंडर-19 वर्ग में प्रिंस और आसिफ की जोड़ी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। बैडमिंटन सिंगल्स अंडर-14 में रितुल ने प्रथम स्थान हासिल किया।

ओएसडी संदीप मेहता का रानियां में स्वागत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रानियां

केंद्रीय वाणिज्य, उद्योग एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री जितिन प्रसाद के ओएसडी संदीप मेहता का रानियां पहुंचने पर सीएम विंडो एमीनेंट पर्सन पिंटू कालड़ा के प्रतिष्ठान पर स्वागत किया गया। इस अवसर पर पंजाबी महासभा के पदाधिकारियों के साथ बैठक आयोजित हुई, जिसमें सामाजिक, पारिवारिक और समसामयिक विषयों पर चर्चा की गई। बैठक को संबोधित करते हुए संदीप मेहता ने कहा कि शिक्षा, राजनीति, समाजसेवा, विज्ञान या खेल जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता का आधार मेहनत, लगन और अनुशासन है। जो व्यक्ति निरंतर परिश्रम करता है, वह अपनी मंजिल अवश्य प्राप्त करता है। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे भटकाव से दूर रहकर पढ़ाई, खेलकूद और सकारात्मक गतिविधियों पर ध्यान दें।

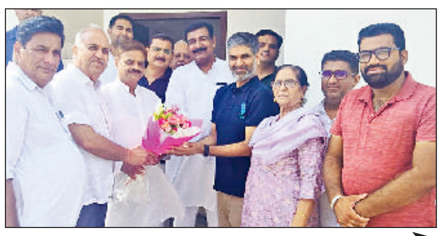

यह रहे उपस्थित

इस अवसर पर नगरपालिका के चेयरमैन मनोज सचदेवा, मार्केट कमेटी के चेयरमैन ललित मोहन पोपली, पार्षद पवन कालड़ा, पार्षद प्रतिनिधि चंद्रभान कामरा, भाजपा मंडलाध्यक्ष सरोज बाला, उमेश मेहता, राजकुमार मेहता, ओमप्रकाश कालड़ा, संदीप सरदाना, सन्नी कालड़ा, हिमांशु कालड़ा, रमन कालड़ा भी उपस्थित थे।

सोशल मीडिया एवं आईटी कार्यकर्ताओं की हुई बैठक

फतेहाबाद। भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीन जोड़ा ने आज जिला भाजपा कार्यालय में सोशल मीडिया एवं आईटी विभाग से जुड़े कार्यकर्ताओं की बैठक ली। बैठक में संगठन की डिजिटल गतिविधियों को और अधिक प्रभावी बनाने, सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं एवं संगठन की नीतियों को सोशल मीडिया के माध्यम से आमजन तक पहुँचाने तथा विभिन्न डिजिटल अभियानों को मजबूती से संचालित करने पर विस्तृत चर्चा की गई। जोड़ा ने कार्यकर्ताओं से कहा कि सोशल मीडिया वर्तमान समय में संगठन का एक सशक्त माध्यम है। सभी कार्यकर्ता सकारात्मक सोच के साथ संगठन की विचारधारा एवं जनहित के कार्यों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने का कार्य करें। उन्होंने आगामी कार्यक्रमों एवं अभियानों को लेकर भी आवश्यक दिशा-निर्देश दिए तथा सभी कार्यकर्ताओं से सक्रियता एवं समन्वय के साथ कार्य करने का आह्वान किया। जिला मीडिया प्रभारी कंवल चौधरी ने कहा कि सोशल मीडिया आज सूचना के आदान-प्रदान का सबसे प्रभावी मंच बन चुका है। उन्होंने कहा कि सभी कार्यकर्ता सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म का प्रभावी उपयोग करते हुए संगठन की नीतियों एवं कार्यक्रमों का व्यापक प्रचार-प्रसार करें तथा भ्रामक एवं असत्य सूचनाओं से बचते हुए सत्य और प्रमाणिक जानकारी ही साझा करें। इस अवसर पर विकास ललोदा, राममेहर धारसूल, सुभाष साहू, पवन कुमार, राहुल सेठी, संदीप सिंह, सुभाष कस्वां, संजीव सहारण, लायक राम गढ़वाल, सोनू वर्मा, पवन भादू, सन्नी बंसल, कुलविंद्र सिंह आदि मौजूद रहे।

भाजपा शक्ति केंद्र बैठकों में फतेहाबाद बना प्रदेश में नंबर वन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

भारतीय जनता पार्टी के संगठनात्मक कार्यों में जिला फतेहाबाद ने एक बार फिर अपनी छाप छोड़ी है। गुरुग्राम स्थित गुरुकमल कार्यालय में आयोजित प्रदेशभर के जिलाध्यक्षों एवं जिला प्रभारियों की महत्वपूर्ण बैठक में जिला फतेहाबाद को जुलाई माह में आयोजित शक्ति केंद्र बैठकों के सफल एवं प्रभावी संचालन के लिए पूरे हरियाणा में प्रथम स्थान हासिल करने पर सम्मानित किया गया।

प्रदेशाध्यक्ष डा. अर्चना गुप्ता की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। बैठक में संगठनात्मक गतिविधियों, शक्ति केंद्रों की बैठकों तथा आगामी कार्यक्रमों को लेकर विस्तृत चर्चा हुई। इसी दौरान जिले की इस उपलब्धि पर भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीन जोड़ा को प्रशंसा पत्र एवं गीता की पुस्तक भेंट कर सम्मानित किया गया।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने जिलाध्यक्ष प्रवीन जोड़ा की पीठ थपथपाते हुए उनके नेतृत्व में संगठन को मजबूत करने और शक्ति केंद्रों की बैठकों के सफल संचालन को सराहा। उन्होंने जिला भाजपा की पूरी टीम के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए कहा कि संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत बनाने में कार्यकर्ताओं की सक्रिय भूमिका अहम है। प्रदेशाध्यक्ष डा. अर्चना गुप्ता ने कहा कि फतेहाबाद जिला संगठनात्मक गतिविधियों में हमेशा अग्रणी रहा है और यहां की टीम हर कार्य पूरी गंभीरता, मेहनत व निष्ठा से करती है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह उपलब्धि किसी एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि जिले के सभी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं की सामूहिक मेहनत, लगन और समर्पण का परिणाम है। सम्मान मिलने पर भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीन जोड़ा ने प्रदेश नेतृत्व एवं मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का आभार जताया। उन्होंने कहा कि यह सम्मान फतेहाबाद जिले के हर कार्यकर्ता का सम्मान है और संगठन द्वारा सौंपे गए प्रत्येक दायित्व को पूरी निष्ठा से निभाते हुए पार्टी को बूथ स्तर तक और मजबूत बनाने का कार्य निरंतर जारी रहेगा। बैठक में प्रदेश मंत्री कृष्ण बेदी, जिला फतेहाबाद प्रभारी सुरेंद्र आर्य, पूर्व सांसद सुनीता दुग्गल आदि मौजूद रहे।

स्वच्छ और हरित पर्यावरण स्वस्थ जीवन का आधार : रणबीर गंगवा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बरवाला

मानसून सीजन के दौरान चलाए जा रहे पौधारोपण अभियान के तहत लोक निर्माण एवं जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा ने शनिवार को बरवाला स्थित मदन लाल ढीगड़ा पार्क में पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

इस अवसर पर उन्होंने आमजन से अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनके संरक्षण का संकल्प लेने का आह्वान किया। कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा ने कहा कि मानसून का मौसम पौधरोपण के लिए सबसे अनुकूल होता है। ऐसे में प्रत्येक नागरिक को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए अधिक से अधिक पौधे लगाने चाहिए। उन्होंने कहा कि स्वच्छ और हरित पर्यावरण स्वस्थ जीवन का आधार है। यदि आज हम प्रकृति के संरक्षण के लिए प्रयास करेंगे तो भविष्य सुरक्षित और समृद्ध होगा। इस अवसर पर नगर परिषद अध्यक्ष रमेश चंद्र बैटरी वाला, मार्केट कमेटी चेयरमैन प्रवीण सैनी पूर्व चेयरमैन सतबीर वर्मा, रणधीर धीरू, भाजपा कोषाध्यक्ष अशोक मित्तल सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

मानसिक दिव्यांग बच्चों की मुस्कान समाज की सबसे बड़ी पूंजी : सरना

हरिभूमि न्यूज ▶▶| टोहाना

समाजसेवी ईश सरना अपनी धर्मपत्नी सीमा रानी सरना के साथ अपूर्वा आश्रय चैरिटेबल ट्रस्ट पहुंचे और मानसिक व बौद्धिक दिव्यांग बच्चों के बीच आत्मीय पल बिताए। उन्होंने बच्चों को उपहार देकर हौसला बढ़ाया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। संस्था संचालक व भारतीय स्टेट बैंक से सेवानिवृत्त राजेश मदान ने बताया कि ट्रस्ट में फिलहाल 20 बालिकाओं और 12 बालकों को शिक्षा, योग, म्यूजिक थेरेपी, फिजियोथेरेपी, सिलाई, कुकिंग व व्यक्तित्व विकास का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। बच्चों को दोपहर का भोजन और गांवों-वार्डों से आने-जाने की सुविधा भी मुफ्त उपलब्ध कराई जाती है, ताकि वे आत्मनिर्भर बनकर जीवन जी सकें।

टोहाना। अपूर्वा आश्रय चैरिटेबल ट्रस्ट पहुंचा सरना दम्पति। फोटो: हरिभूमि

दया नहीं, अवसर और सम्मान चाहिए

ईश सरना ने कहा कि मानसिक व बौद्धिक दिव्यांग बच्चे समाज पर बोझ नहीं, बल्कि ईश्वर की अनमोल देन हैं। उन्हें दया की नहीं बल्कि अवसर, शिक्षा, सम्मान और अपनेपन की जरूरत है। उन्होंने कहा कि इन बच्चों की मुस्कान ही समाज की सबसे बड़ी पूंजी है, और अगर हर सक्षम व्यक्ति थोड़ा सहयोग दे तो इनका भविष्य उज्ज्वल बन सकता है। उन्होंने ट्रस्ट के संचालक व सभी सदस्यों की निस्वार्थ सेवा भावना की सराहना करते हुए इसे मानवता की सच्ची पूजा बताया। इस अवसर पर रजनी इंसा, भानु मेहता, अंगूरी देवी, शंकर लाल, जोनी बत्रा, विजय कुमार, सुनील कंसल सहित संस्था के अन्य सदस्य मौजूद रहे।

यह उपलब्धि अधिकारियों तथा मतदाताओं के सक्रिय सहयोग का परिणाम : उपायुक्त

एसआईआर : फतेहाबाद में 92.88% गणना फॉर्म हुए डिजिटल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार संचालित एसआईआर अभियान के तहत फतेहाबाद जिले ने उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। 24 जुलाई तक प्राप्त गणना प्रपत्रों में से 92.88 प्रतिशत गणना फॉर्म सफलतापूर्वक डिजिटल किए जा चुके हैं।

जिला के कुल 7 लाख 10 हजार 261 पंजीकृत मतदाताओं में से 6 लाख 59 हजार 693 मतदाताओं के प्रपत्रों को डिजिटाइज किया गया है तथा शेष 50 हजार 568 मतदाताओं को एएसडीडी श्रेणी में मार्क किया गया है। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी डॉ. विवेक भारती ने कहा कि यह उपलब्धि निर्वाचन अधिकारियों, बूथ लेवल अधिकारियों तथा जिले के मतदाताओं के सक्रिय सहयोग और समन्वित प्रयासों का परिणाम है। जिले की तीनों विधानसभा क्षेत्रों में डिजिटाइजेशन का कार्य संतोषजनक गति से आगे बढ़ा है।

फतेहाबाद। एसआईआर के काम में लगे कर्मचारी। फोटो: हरिभूमि

विधानसभा वार आंकड़े

टोहाना विधानसभा क्षेत्र ने 94.78 प्रतिशत डिजिटाइजेशन के साथ जिला में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। यहां 2 लाख 28 हजार 313 मतदाताओं में से 2 लाख 16 हजार 404 गणना फॉर्म डिजिटल किए जा चुके हैं। रतिया विधानसभा क्षेत्र में 2 लाख 25 हजार 413 मतदाताओं में से 2 लाख 7 हजार 550 गणना फॉर्म अपलोड होकर 92.08 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है। वहीं फतेहाबाद विधानसभा क्षेत्र में 2 लाख 56 हजार 535 मतदाताओं में से 2 लाख 35 हजार 739 गणना फॉर्म डिजिटल किए जा चुके हैं, जो 91.89 प्रतिशत प्रगति को दर्शाता है। डॉ. विवेक भारती ने बताया अनुपस्थित मतदाता, स्थानांतरित मतदाता, मृत मतदाता अथवा पहले से अन्य स्थान पर पंजीकृत मतदाताओं के गणना प्रपत्र अपलोड नहीं किये गये। फतेहाबाद विधानसभा क्षेत्र में शेष 20,796 मामलों में 4,491 अनुपस्थित, 7,980 स्थानांतरित, 7,330 मृत, 843 पहले से पंजीकृत तथा 152 अन्य श्रेणी के मतदाता शामिल हैं। इसी प्रकार रतिया विधानसभा क्षेत्र के 17,863 मामलों में 2,777 अनुपस्थित, 6,955 स्थानांतरित, 7,038 मृत, 966 पहले से पंजीकृत तथा 127 अन्य श्रेणी के मतदाता चिन्हित किए गए हैं। वहीं टोहाना विधानसभा क्षेत्र के 11,909 मामलों में 1,415 अनुपस्थित, 6,175 स्थानांतरित, 3,790 मृत, 415 पहले से पंजीकृत तथा 114 अन्य श्रेणी के मतदाता शामिल हैं।

खबर संक्षेप

मेधावी विद्यार्थी 31 तक करें छात्रवृत्ति के लिए आवेदन

सिरसा। जाट धर्मशाला सभा ने जाट समाज के मेधावी विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से छात्रवृत्ति प्रदान करने का निर्णय लिया है। सभा के प्रधान मोहन लाल झोरड़ ने बताया कि इस वर्ष 10वीं और 12वीं कक्षा में 90 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी छात्रवृत्ति के लिए आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि केवल शैक्षणिक उपलब्धि ही नहीं, बल्कि जिन विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर पर किसी भी क्षेत्र में समाज और प्रदेश का नाम रोशन किया है, उन्हें भी विशेष रूप से सम्मानित किया जाएगा। सभा के अनुसार, छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करने की अंतिम तिथि 31 जुलाई निर्धारित की गई है।

लाठीचार्ज के दोषी मोदी इस्तीफा दें : सक्सेना

फतेहाबाद। वरिष्ठ अधिवक्ता व इनेलो लीगल सेल के स्टेट वाइस

प्रेजिडेंट अनिल सक्सेना ने एक विज्ञप्ति जारी कर पेपर लीक मामले को लेकर केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला है। अनिल सक्सेना ने कहा कि पेपर लीक मामले में केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा अब नाकाफी है, क्योंकि देश के भविष्य यानी छात्रों पर लाठियां चलाई गई। उन्होंने कहा कि बिहार और दिल्ली में देश के छात्रों पर गोलियां तक चलाई गई हैं। उन्होंने कहा कि इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का इस्तीफा जब तक नहीं आता, तब तक यह धरना जारी रखना चाहिए।

गुरुद्वारे में संगत को दी डाईट प्लान की जानकारी

रतिया। गांव नथवान स्थित गुरुद्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब अंगीठा साहिब आयोजित डाईट प्लान शिविर में सेवादारों ने संगत को डाईट प्लान की जानकारी दी। गुरजीत सिंह आस्ट्रेलिया एवं रूपिंद्र सिंह लुधियाना की प्रेरणा से शारीरिक तंदुरुस्ती हेतू आयोजित डाईट प्लान में संगत को वजन कम करने, बीमारियों से बचाव के लिए डाईट प्लान की जानकारी दी गई। सेवादारों ने बताया कि गुरजीत सिंह की प्रेरणा से गुरुद्वारा साहिब में कुदरती तरीकों से शारीरिक तंदुरुस्ती एवं रोगों से निजात पाने के लिए डाईट कैंप का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि डाईट प्लान शिविर 26 जुलाई तक चलेगा और इसके साथ साथ संगत को नाम सिमरन से भी जोड़ा जा रहा है।

सिरसा में तैराकी का महाकुंभ शुरू: 356 स्कूलों के 1200 तैराक दिखा रहे प्रतिभा

पहले ही दिन अत्याधुनिक तकनीक के बीच खिलाड़ियों ने दमदार प्रदर्शन किया

सिरसा। प्रतियोगिता में भाग लेते प्रतिभागी। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶। सिरसा

डेरा सच्चा सौदा के एमएसजी भारतीय खेल गांव में शनिवार से चार दिवसीय सीबीएसई नॉर्थ जोन-2 बालक वर्ग स्विमिंग चैंपियनशिप का रंगारंग आगाज हो गया। शाह सतनाम जी गर्ल्स स्कूल की ओर से आयोजित इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में उत्तर भारत के 356 से अधिक सीबीएसई स्कूलों के करीब 1200 तैराक हिस्सा ले रहे हैं। पहले ही दिन अंतरराष्ट्रीय स्तर की व्यवस्थाओं और अत्याधुनिक तकनीक के बीच खिलाड़ियों ने दमदार प्रदर्शन किया, जबकि खेल विशेषज्ञों ने एमएसजी भारतीय खेल गांव के खेल ढांचे को देश के सर्वश्रेष्ठ परिसरों में शामिल बताया। प्रतियोगिता का शुभारंभ स्विमिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया एवं हरियाणा ओलंपिक एसोसिएशन के उपाध्यक्ष तथा हरियाणा स्विमिंग एसोसिएशन के महासचिव अनिल खत्री ने मुख्य अतिथि के रूप में किया।

उनके साथ सीबीएसई ऑब्जर्वर डॉ. गार्गी, उप पुलिस अधीक्षक राजवीर यादव, डेरा सच्चा सौदा के सीनियर वाइस चेयरमैन डॉ. पीआर नैन, प्रबंधन समिति सदस्य प्रवीण इन्सां, शाह सतनाम जी शिक्षण संस्थानों के प्रशासक चरणजीत सिंह इंसां तथा संस्थानों के स्पोर्ट्स हेड कोच डॉ. नवजीत भुल्लर भी मौजूद रहे।

मुख्य अतिथि अनिल खत्री ने प्रतियोगिता की व्यवस्थाओं की सराहना करते हुए कहा कि एमएसजी भारतीय खेल गांव में खिलाडियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। उन्होंने आयोजकों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि खेलों को बढ़ावा देने के लिए जिस स्तर का बुनियादी ढांचा यहां विकसित किया गया है, वह प्रेरणादायी है। उन्होंने कहा कि आमतौर पर नॉर्थ जोन प्रतियोगिताओं में इलेक्ट्रॉनिक टच पैड्स जैसी सुविधाएं देखने को नहीं मिलतीं, लेकिन यहां यह व्यवस्था खिलाडिय़ों को निष्पक्ष और सटीक परिणाम देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। उन्होंने कहा कि 50 और 100 मीटर जैसी स्पर्धाओं में विजेता का फैसला कई बार मिलीसेकंड के अंतर से होता है। ऐसे में इलेक्ट्रॉनिक टाइमिंग सिस्टम खिलाडिय़ों और अभिभावकों दोनों का विश्वास बढ़ाता है।

खिलाड़ियों के ठहरने की उचित व्यवस्था

शाह सतनाम जी शिक्षण संस्थानों के प्रशासक चरणजीत सिंह एवं स्पोर्ट्स हेड कोच डॉ. नवजीत भुल्लर ने बताया कि प्रतियोगिता में अंडर-11, अंडर-14, अंडर-17 और अंडर-19 आयु वर्ग की विभिन्न स्पर्धाओं के मुकाबले आयोजित किए जा रहे हैं। खिलाड़ियों के ठहरने, भोजन, परिवहन और अन्य सभी आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था कशिश रेस्टोरेंट में की गई है। इसके अलावा खिलाड़ियों को एमएसजी भारतीय खेल गांव तक लाने-ले जाने के लिए विशेष वाहनों की भी व्यवस्था की गई है।

1500 मीटर फ्री स्टाइल स्पर्धा आकर्षण का केंद्र रही

चैंपियनशिप के पहले दिन अंडर-19 वर्ग की 1500 मीटर फ्री स्टाइल स्पर्धा आकर्षण का केंद्र रही। फरीदाबाद के दर्श सिंह ने 18 मिनट 53 सेकंड 25 मिलीसेकंड का समय निकालते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया। पंजाब के पठानकोट के विनायका महाजन ने 18 मिनट 53 सेकंड 59 मिलीसेकंड के साथ दूसरा स्थान हासिल किया। झज्जर के दिव्यांश कादियान तीसरे, पानीपत के अरमान राठी चौथे तथा लुधियाना के आर्यन मिश्रा पांचवें स्थान पर रहे। कार्यक्रम में प्रबंधन समिति के सदस्य रिटायर्ड कर्नल नरेंद्र पाल सिंह तूर, शाह सतनाम जी गर्ल्स स्कूल की प्रिंसिपल डॉ. शीला पूनिया इंसां, बॉयज स्कूल के प्रिंसिपल राकेश धवन इंसां, कॉलेज प्रिंसिपल डॉ. दिलावर सिंह तथा सेंट एमएसजी ग्लोरियस इंटरनेशनल स्कूल के डायरेक्टर प्रिंसिपल अजय धमीजा इंसां सहित बड़ी संख्या में खिलाड़ी, प्रशिक्षक और अभिभावक उपस्थित रहे।

कारगिल विजय दिवस पर शहीदों को दी श्रद्धांजलि

फतेहाबाद। बीएड कॉलेज में कारगिल विजय दिवस पर डॉक्युमेंट्री देखते विद्यार्थी।

हरिभूमि न्यूज ▶▶। फतेहाबाद

एमएम कॉलेज ऑफ एजुकेशन, फतेहाबाद की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा कारगिल विजय दिवस के अवसर पर प्रेरणादायक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान भारतीय सेना के वीर जवानों के अदम्य साहस, अद्वितीय शौर्य, सर्वोच्च बलिदान और राष्ट्रभक्ति को नमन करते हुए एक विशेष डॉक्यूमेंट्री का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम के दौरान पूरा महाविद्यालय परिसर देशभक्ति के रंग में रंगा नजर आया और विद्यार्थियों में राष्ट्र के प्रति अगाध गर्व, सम्मान व समर्पण की भावना साफ दिखाई दी। डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से एनएसएस स्वयंसेवकों को वर्ष 1999 के ऐतिहासिक कारगिल युद्ध के महत्व से परिचित कराया गया। इसमें दिखाया गया कि कैसे भारतीय सेना के शूरवीरों ने बर्फ से ढकी दुर्गम चोटियों और शून्य से नीचे के तापमान जैसी विकट परिस्थितियों में भी दुश्मन के दांत खट्टे किए। डॉक्यूमेंट्री में सेना की अभूतपूर्व रणनीतियों, वीर जवानों के दृढ़ संकल्प और उनके परिजनों द्वारा किए गए त्याग को अत्यंत मार्मिक एवं जीवंत रूप में प्रस्तुत किया गया, जिसे देख उपस्थित विद्यार्थियों की आंखें नम हो गईं और सीना गर्व से चौड़ा हो गया।

दो मिनट का रखा मौन

कार्यक्रम के समापन पर सभी प्राध्यापकों, स्वयंसेवकों और उपस्थितजनों ने कारगिल के अमर शहीदों को नमन करते हुए दो मिनट का मौन धारण कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके साथ ही सभी ने शहीदों के दर्शाए मार्ग व उच्च आदर्शों पर चलने तथा राष्ट्रहित एवं समाजसेवा के कार्यों में सदैव तत्पर रहने का सामूहिक संकल्प लिया। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. जनक रानी ने अपने संबोधन में कहा कि कारगिल के वीर सैनिकों का त्याग, साहस और राष्ट्रप्रेम प्रत्येक भारतीय के लिए प्रेरणा का स्रोत है। एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी सुमन बिश्नोई ने सभी स्वयंसेवकों से समाज एवं राष्ट्र के विकास में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान किया।

12 प्रकल्पों के माध्यम से समाज सेवा में जुटी सेवा भारती, दे रही प्रशिक्षण

- सेवा भारती द्वारा सेवा दर्शन कार्यक्रम, 12 प्रकल्पों के माध्यम से समाज सेवा में जुटी संस्था

हरिभूमि न्यूज ▶▶। फतेहाबाद

फतेहाबाद। सेवा दर्शन कार्यक्रम में उपस्थित सदस्यगण। फोटो : हरिभूमि

सेवा भारती के सहयोग से सेवा दर्शन कार्यक्रम का आयोजन हंस कालोनी स्थित तीर्थ राम शर्मा सेवा भारती बाल संस्कार केंद्र में किया गया। सेवा भारती के जिला संरक्षक हीरा लाल गुप्ता व जिला प्रधान नरेश बंसल ने बताया कि जिले में सेवा भारती द्वारा जनसेवा के 12 विभिन्न प्रकल्प चलाए जा रहे हैं। इनमें अशोक नगर और हंस कॉलोनी में संचालित किए जा रहे प्राइमरी स्कूल शामिल हैं, जो वंचित वर्ग के बच्चों को शिक्षा और संस्कार प्रदान करने का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि इन प्राइमरी स्कूलों के अलावा छोटे बच्चों के लिए क्रेच, महिलाओं को स्वरोजगार के लिए ब्यूटी पार्लर का कार्य भी सिखाया जा रहा है। वहीं टोहाना में सिलाई सेंटर, बाल केंद्र भी चलाए जा रहे है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ फतेहाबाद के जिला प्रचार प्रमुख जसवंत भदरेजा ने बताया कि सेवा भारती समाज के जरूरतमंद वर्गों के उत्थान और बाल संस्कारों के संवर्धन के लिए निरंतर प्रयासरत है। सेवा दर्शन कार्यक्रम के माध्यम से संस्था द्वारा चलाए जा रहे सेवा कार्यों और समाज हित की गतिविधियों से अवगत कराया गया। इस मौके पर परमजीत शर्मा, सुदर्शन बतरा, लीलाधर दहिया, रमन कुमार आहुजा, नीलम नारंग, अर्जुन जग्गा, रमेश जोइया आदि मौजूद रहे।

गो सेवा से समस्त पापों का होता है नाश : कृष्णा

रतिया। अरोड़ा कालोनी स्थित श्री राधा कृष्ण सेवा आश्रम में आयोजित गौ कथा में प्रवचन करते हुए कथा वाचिका बालिका कृष्ण प्रिया दासी ने कहा कि गाय में तैंतीस कोटि देवी-देवताओं का वास होता है, उनकी सेवा से समस्त पापों का नाश होता है। गौ सेवा को सबसे बड़ा धर्म व मोक्ष का मार्ग बताया गया है। उन्होंने कहा कि गाय के अंगों में सभी देवी-देवताओं और तीर्थों का निवास माना गया है। गाय का दूध, दही, घी, गसैमूत्र और गोबर शरीर और घर दोनों को पवित्र करते हैं। उन्होंने कहा कि हिंदू संस्कृति बहुत पुरानी है, उसे संभालकर रखना हमारी जिम्मेदारी बनती है। गाय पालने के साथ उसका आदर-सम्मान भी करना चाहिए। गाय को खुले आसमान और सडक़ों पर नहीं छोडऩा चाहिए। घर में गाय की सेवा होगी तो माहौल अच्छा होगा।

नाटक से नशे के दुष्परिणाम बताए

हरिभूमि न्यूज ▶▶। सिरसा

सिरसा। नाटक का मंचन करते कलाकार। फोटो : हरिभूमि

हरियाणा कला परिषद कुरुक्षेत्र के तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय बाल नाट्य उत्सव के दूसरे दिन महाराजा अग्रसेन स्कूल में सामाजिक चेतना पर आधारित नाटक जहर का प्रभावशाली मंचन किया गया। यह कार्यक्रम महाराजा अग्रसेन स्कूल के अध्यक्ष अनिल गनेरीवाला के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया।

रंगरेज नाट्य दल द्वारा प्रस्तुत नाटक जहर का निर्देशन युवा रंगकर्मी प्रकाश चंद्र चौहान ने किया। नाटक ने समाज में तेजी से फैल रही नशे की समस्या को अत्यंत संवेदनशील, यथार्थपूर्ण एवं प्रभावशाली ढंग से मंच पर प्रस्तुत किया। प्रस्तुति ने यह संदेश दिया कि नशे से दूर रहकर ही स्वस्थ, सुखी और संस्कारित समाज का निर्माण संभव है। नाटक की समाप्ति पर सभागार देर तक तालियों की गडग़ड़ाहट से गूंजता रहा और कलाकारों का गर्मजोशी से अभिनंदन किया गया। अपने संबोधन में डॉ. जपनीत कौर ने कहा कि रंगमंच समाज को जागरूक करने का अत्यंत प्रभावी माध्यम है। ऐसे नाटक विद्यार्थियों और युवाओं को नशे जैसी सामाजिक बुराइयों से दूर रहने तथा सकारात्मक जीवन मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देते हैं। हरियाणा कला परिषद तत्वावधान में केएल थियेटर एवं जेसीडी रंगशाला द्वारा आयोजित ये बाल नाट्य उत्सव विद्यार्थियों में नाट्य कला को सीखने ही नहीं बल्कि सामाजिक चेतना का अभियान है।

सिरसा। राजकीय विद्यालय मिठड़ी में पौधा लगाते स्काउट मास्टर व शिक्षक।

नशे से दूरी, प्रकृति से दोस्ती, यही खुशहाल जीवन की राह : सिकंदर

हरिभूमि न्यूज ▶▶। ओढ़ा

नशा इंसान से केवल उसका स्वास्थ्य नहीं, बल्कि उसके सपने, परिवार और खुशहाल भविष्य भी छीन लेता है। युवा नशे से दूर रहकर अपनी ऊर्जा शिक्षा, खेल और समाजसेवा में लगाएं तथा अपने जीवन और समाज को सुंदर बनाएं। यह संदेश भारत स्काउट्स एंड गाइड्स सिरसा के नशा मुक्ति जागरूकता अभियान के तहत राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मिठड़ी में स्काउट मास्टर डॉ. सिकंदर सिंह एवं डॉ. गुरदास सिंह सोनी ने विद्यार्थियों को दिया। उन्होंने युवाओं को नशे के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक दुष्प्रभाव बताते हुए कहा कि नशे को 'ना' कहना ही बेहतर भविष्य को 'हां' कहना है। विद्यार्थी स्वयं नशे से दूर रहें और अपने दोस्तों व समाज को भी इसके खिलाफ जागरूक करें। अभियान के दौरान पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया गया। टीम ने कहा कि जिस तरह नशा मुक्त युवा समाज की ताकत हैं, उसी तरह पेड़-पौधे धरती और जीवन की ताकत हैं। इसलिए नशे से दूरी और प्रकृति से दोस्ती को जीवन का संकल्प बनाना चाहिए। स्कूल प्राचार्य बंसी एवं पंजाबी प्राध्यापक जितेंद्र गर्ग ने इस सार्थक पहल के लिए टीम का आभार जताया। भारत स्काउट्स एंड गाइड्स सिरसा के जिला सचिव सुखदेव सिंह ढिल्लों एवं जिला संगठन आयुक्त (स्काउट) डॉ. इंद्र सेन ने अभियान की सराहना करते हुए कहा कि स्काउटिंग का उद्देश्य युवाओं को अनुशासन और सेवा के साथ सामाजिक बुराइयों के खिलाफ जिम्मेदार नागरिक बनाना है। इस अवसर पर विद्यालय के समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 9315429403, 9253681005

स्वस्थ बेटियां ही समर्थ व सुसंस्कारी भारत का निर्माण करेंगी: डा. भावना

सिरसा। भारत विकास परिषद शाखा सिरसा द्वारा शनिवार को आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा में रक्त अल्पता जांच शिविर का आयोजन आयोजन किया गया। शिविर में 51 छात्राओं के रक्त की जांच की गई। जिन छात्राओं में हीमोग्लोबिन की कमी पाई गई, उन्हें डॉ. भावना अग्रवाल द्वारा इस कमी से भविष्य में होने वाले दुष्प्रभावों एवं बीमारियों की जानकारी दी गई। साथ ही, इस कमी को दूर करने के लिए दैनिक दिनचर्या एवं आहार में सुधार के सुझाव भी दिए गए। उन्होंने सर्वाइकल कैंसर बारे छात्राओं को बड़े विस्तार से समझाते हुए कारण,बचाव एवं उपचार की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि स्वस्थ बेटियां ही समर्थ-सुसंस्कारी भारत का निर्माण करेंगी तथा स्वस्थ जीवन ही सफल जीवन का आधार है।

डिवाइन इंटरनेशनल स्कूल में पौधरोपण कर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

फतेहाबाद। डिवाइन स्कूल में पौधरोपण करते स्कूल प्रबंधक।

फतेहाबाद। पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से डिवाइन इंटरनेशनल स्कूल में पौधारोपण अभियान का शुभारंभ किया गया। अभियान की शुरुआत देवेन्द्र दहिया ने की। इस अवसर पर विद्यालय की प्रिंसिपल सीमा मक्कड़, सुमन टुटेजा, रविंद्र गढ़वाल, शकुंतला गढ़वाल, सुखविंदर सिंह तथा हरलिन सहित विद्यालय परिवार के सदस्यों ने परिसर में विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपे और उनके संरक्षण का संकल्प लिया। कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने कहा कि बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने के लिए अधिक से अधिक पौधारोपण समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के विशेष अवसरों पर पौधे लगाने और उनकी नियमित देखभाल करने का संकल्प लेना चाहिए। तभी आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और हरित वातावरण मिल सकेगा। प्रिंसिपल सीमा मक्कड़ ने कहा कि विद्यालय शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों में सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारी का भाव विकसित करने के लिए समय-समय पर ऐसे कार्यक्रम आयोजित करता रहेगा।

कारगिल युद्ध के वीर शहीदों की शहादत को नमन कर दी श्रद्धांजलि

सिरसा। कारगिल विजय दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में प्रस्तुति देते विद्यार्थी।

ओढां। कारगिल विजय दिवस के अवसर पर जेके मेमोरियल पब्लिक स्कूल में कारगिल युद्ध के वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत शहीदों को श्रद्धासुमन अर्पित कर की गई। विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह के साथ देशभक्ति से ओत-प्रोत नृत्य प्रस्तुत किए, जिन्होंने सभी का मन मोह लिया। उनकी प्रस्तुतियों ने पूरे वातावरण को देशभक्ति और गर्व की भावना से भर दिया तथा उपस्थित सभी लोगों ने उनकी सराहना की। इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षकों ने प्रेरणादायक भाषण दिए, जिनमें उन्होंने कारगिल विजय दिवस के महत्व, भारतीय सैनिकों के अदम्य साहस, त्याग और बलिदान तथा युवाओं में देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता और जिम्मेदारी की भावना विकसित करने पर प्रकाश डाला। चेयरमैन डॉ. पाला राम, मैनेजमेंट टीम तथा प्रधानाचार्या पारुल अरोड़ा उपस्थित रहीं। पारुल अरोड़ा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमें अपने वीर सैनिकों के बलिदान का सदैव सम्मान करना चाहिए।

सुरक्षा-व्यवस्था यातायात पुलिस के बेड़े में शामिल हुई नई क्रेन, एसपी निकिता खट्टर ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

बाजार में ट्रैफिक नियम तोड़े तो गाड़ी होगी जब्त, एक्शन में पुलिस

हरिभूमि न्यूज ▶▶। फतेहाबाद

फतेहाबाद। नई क्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना करतीं एसपी निकिता खट्टर।

शहर की यातायात व्यवस्था को और अधिक सुचारु, सुरक्षित एवं प्रभावी बनाने की दिशा में फतेहाबाद पुलिस ने एक बड़ा कदम उठाया है।

अब बाजार या मुख्य सडक़ों पर नो-पार्किंग जोन में वाहन खड़े करने और ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करने वालों की खैर नहीं होगी। पुलिस लाइन फतेहाबाद में आयोजित कार्यक्रम के दौरान पुलिस अधीक्षक निकिता खट्टर ने यातायात पुलिस के बेड़े में शामिल की गई आधुनिक नई पुलिस क्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इसके बाद क्रेन शहर के बाजार में पहुंची और सडक़ पर खड़े कई वाहनों को उठाकर थाने ले गई।पुलिस अधीक्षक निकिता खट्टर ने कहा कि बढ़ते यातायात दबाव को देखते हुए आधुनिक संसाधनों का उपयोग समय की मांग है। नई क्रेन के शामिल होने से सडक़ पर नो-पार्किंग में खड़े वाहनों को उठाने, दुर्घटनाग्रस्त या खराब वाहनों को शीघ्रता से हटाने में आसानी होगी। इससे शहर में बार-बार लगने वाले ट्रैफिक जाम पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित होगा और आम नागरिकों को सुगम व निर्बाध आवागमन की सुविधा मिलेगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि फतेहाबाद पुलिस सडक़ सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए आधुनिक संसाधनों से लगातार खुद को सशक्त बना रही है। एसपी ने वाहन चालकों से अपील करते हुए कहा कि यातायात नियमों की पालना न केवल कानूनी दायित्व है, बल्कि यह हर नागरिक की नैतिक जिम्मेदारी भी है। उन्होंने आग्रह किया कि दोपहिया वाहन चालक हमेशा हेलमेट और चारपहिया वाहन चालक सीट बेल्ट का प्रयोग करें। निर्धारित गति सीमा में ही वाहन चलाएं और शराब या नशे की हालत में स्टीयरिंग न संभालें। वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का उपयोग बिल्कुल न करें और वाहनों को केवल निर्धारित पार्किंग स्थल पर ही खड़ा करें।

यातायात सुधार की दिशा में उठा कदम

कार्यक्रम के दौरान पुलिस और जनता के बीच बेहतर तालमेल तथा यातायात सुधार में सराहनीय योगदान देने वाले समाज के कई प्रतिष्ठित नागरिकों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वालों में विनोद कुमार तायल, सुभाष गर्ग, सुरेन्द्र मित्तल, जगदीश भादू, हजारी लाल नरूला, दलीप कथूरिया, विजय मोगा, धर्मपाल बुढ़लाडिया, वैभव चौधरी, संजय तनेजा, राजीव बत्रा तथा सुशील बंसल प्रमुख रूप से शामिल रहे। गणमान्य नागरिकों ने पुलिस के इस कदम की भूरि-भूरि प्रशंसा की और भविष्य में भी पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। कार्यक्रम के दौरान उप पुलिस अधीक्षक जयसिंह, थाना यातायात प्रभारी उप-निरीक्षक जयसिंह सहित ट्रैफिक पुलिस के तमाम अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

आषाढ़ बीतने वाला है, सावन का महीना शुरू होने वाला है। रिमझिम फुहारों से भीगी हरी-भरी प्रकृति और मन को प्रफुल्लित करने का यह मौसम हमें आमंत्रित करता है कि आइए, एक बार फिर अपने बचपन में लौट जाएं। बारिश की फुहारों में तन मन को भिगो लें, अपनों के संग यादगार पल बिता लें, उनके साथ झूम लें। यकीन मानिए, ये पल आप कभी नहीं भूल पाएंगे।

आइए फिर बन जाएं बच्चे

रिमझिम बारिश का लें जी भर मजा

कवर स्टोरी
शिखर चंद जैन

आधुनिक भागदौड़ और तनाव भरी जिंदगी में अगर बारिश के मौसम का असली आनंद लेना है, तो हमें अपने भीतर के बचपन को फिर से जगाना होगा। यानी आने वाले सावन-भादो के दिनों का मजा लेने के लिए बन जाएं बच्चे, थोड़े से अक्ल के कच्चे। तर्क, समझदारी और दुनियादारी के बोझ को किनारे रखकर, एक बच्चे जैसी मासूमियत और बेफिक्री से इस मौसम को जीना सीख लें तो पूरे साल जीवन ऊर्जा से लबरेज रह सकते हैं।

समेट लें हर बूंद: बारिश के ये भीगे-भीगे दिन साल में एक बार आते हैं और हमें यह संदेश देते हैं कि जिंदगी सिर्फ काम करने, पैसे कमाने और जिम्मेदारियां निभाने का नाम ही नहीं है। इस मौसम के बहाने प्रकृति हमें खुलकर हंसने, भीगने और गाने का न्यौता देती है। इसलिए इन दिनों में अपनी सारी 'अक्लमंदी' को कुछ दिनों के लिए आराम करने भेज दीजिए। दिल से पूरी तरह 'बच्चे' बनिए और सावन-भादो की हर एक बूंद को अपने भीतर समेट लीजिए। क्योंकि समझदारी में भले ही सुरक्षा हो, पर असली आनंद तो बेफिक्री की मासूमियत में ही मिलती है।

तर्क छोड़ लें आनंद: बड़े होने पर हम हर चीज में नफा-नुकसान, सही-गलत और लॉजिक ढूंढ़ने लगते हैं। बारिश का यह मौसम तर्क का नहीं, बल्कि अहसास का उत्सव है। जब आसमान से बूंदें गिरती हैं, तो एक समझदार व्यक्ति कपड़े भीगने या बीमार पड़ने के डर से छतरी तान लेता है। इसके विपरीत, मासूम बच्चे बिना किसी बचाव के बारिश की बूंदों का मजा लेने लगते हैं। बारिश का असली मजा लेने के लिए पहली शर्त यही है कि हम कुछ समय के लिए अपनी प्रौढ़ उम्र की समझदारी को भूलकर प्रकृति के इस उपहार को स्वीकार करें।

भीगने का बेबाक उल्लास: छत पर जाकर या सड़कों पर बाहें फैलाकर आसमान से गिरती बूंदों को अपने चेहरे पर महसूस करना एक थेरेपी की तरह है। जब आप 'बच्चे' बन जाते हैं, तो आपको इस बात की परवाह नहीं होती कि लोग क्या कहेंगे या आपके जूते खराब हो जाएंगे। बारिश का पानी हमारे तन के साथ-साथ मन के तनाव को भी धो देता है। यह बेफिक्री ही बारिश को खास बनाती है।

कागज की कश्ती से दोस्ती: 'वो कागज की

कश्ती, वो बारिश का पानी।' मशहूर शायर सुदर्शन फाकिर द्वारा लिखी यह बेहद खूबसूरत नज्म वर्षा ऋतु से जुड़ी यादों को सामने ले आती है। बचपन में घंटों बैठकर रंग-बिरंगे कागजों से नाव बनाना और उन्हें बहते पानी में छोड़ना एक अलग ही रोमांच देता था। जब नाव किसी बाधा को पार कर आगे निकल जाती, तो मन खुशी से झूम उठता था। क्यों न एक बार फिर बच्चा बनकर कागज की कश्ती को बहते पानी में बहाएं। महसूस करें कि छोटी-छोटी चीजों में कितनी बड़ी खुशियां छिपी होती हैं!

नहीं भूलेगी सोंधी महक: तपती गर्मी के बाद जब बारिश की पहली फुहार सूखी धरती पर पड़ती है, तो उससे उठने वाली सोंधी महक आत्मा को तृप्त कर देती है। बारिश में भीगते, मिट्टी में खेलने के दौरान बच्चे इस सोंधी महक से भी जुड़ जाते हैं। आज कंक्रीट के जंगलों और 'स्क्रीन टाइम' के दौर में, बारिश हमें वापस मिट्टी की ओर खींचता है। बिना चप्पल पहने हरी घास और गीली मिट्टी पर चलकर देखिए, यह अनुभूति आप भूल नहीं पाएंगे।

झूले पर पींग बढ़ाने का रोमांच: सावन-भादो के मौसम में पुराने समय में बाग-बगीचों में पेड़ों

की डालियों पर रस्सियों के झूले डाले जाते थे। किशोरियां और महिलाएं मिलकर लोकगीत गाती थीं और आसमान छूने की होड़ में पींग बढ़ाती थीं। हवा के झोंकों के साथ ऊपर जाना और फिर तेजी से नीचे आना, दिल की धड़कनों को बढ़ा देता था। आज भले ही वो बाग कम हो गए हों, लेकिन किसी पार्क में या घर की बालकनी में एक छोटा-सा झूला डालकर भीगी हवाओं का आनंद लिया ही जा सकता है। इससे हमारे भीतर का बाल-मन जीवंत हो उठेगा।

फायदेमंद है अक्ल का कच्चापन: 'अक्ल का कच्चा' होने का मतलब मूर्ख होना नहीं, बल्कि 'ओवरथिंकिंग' से मुक्त होना है। बारिश की बूंदें हमसे कहती हैं कि इस पल में जियो। जैसे बच्चे को कल की चिंता नहीं होती, वैसे ही कुछ घंटों के लिए अपनी अक्ल और चिंताओं को ताले में बंद कर देना ही आनंद मार्ग का दरवाजा खोलता है।

लजीज पकवानों का लें मजा: रसोई से घेवर, मालपुए, मूंगदाल के चीले, गरमा-गरम पकोड़े और अदरक वाली चाय की खुशबू, बारिश के मौसम का लुत्फ और बढ़ा देती है। अगर आप समझदार बने रहेंगे तो हमेशा कैलोरी, डाइट और फैट के हिसाब-किताब में उलझे रहेंगे। लेकिन बारिश का मजा तो तब आएगा, जब आप बच्चे की तरह बिना किसी गिल्ट के लजीज व्यंजनों का स्वाद लेंगे।

हरियाली को निहारने का सुख: एक बच्चा प्रकृति के इस बदलाव को बड़े कौतूहल से देखता है। पत्तियों पर अटकी बूंदें, रेंगते हुए छोटे कीट और इंद्रधनुष उसे मोहित कर देते हैं। जब हम एक बच्चे की विस्मय भरी नजरों से इस हरियाली को देखते हैं, तो हमें भी हर शय आकर्षक लगने लगती है। *

गीत-संगीत के संग थिरकन

बारिश सिर्फ देखने या छूने का नहीं, बल्कि सुनने का भी मौसम है। बादलों की गड़गड़ाहट, मेंढकों की टर्र-टर्र, झींगुरों की आवाज और पत्तियों पर गिरती बूंदों का अपना एक संगीत होता है। इसके साथ ही, लोकगीतों और कजरी की परंपरा इस मौसम को संगीतमय बनाती है। कुछ पल के लिए जब आप बच्चे बनते हैं, तो झिझक छोड़कर संगीत की धुन पर अपने परिजन या दोस्तों के संग झूम उठते हैं। बारिश के गानों पर जी भर झूमना या नाचना, मन के भीतर दबे हुए सारे गुबार को बाहर निकाल देता है।

संगीत-कला-मनोरंजन के साथ

सुधरे स्वास्थ्य-बढ़े आयु

अगर आप लंबे समय तक स्वस्थ रहना चाहते हैं, अपनी मेमोरी, सुकून और आयु बढ़ाना चाहते हैं तो अपनी व्यस्त दिनचर्या में से कुछ समय अपने मनोरंजन के लिए निकालिए। कला और संगीत का जीवन पर कैसा सकारात्मक असर पड़ता है, इसका खुलासा हाल में एक स्टडी में हुआ है।

लाइफस्टाइल
अंजू जैन

अगली बार जब आप अपने साप्ताहिक बजट या वीकेंड की योजना बनाएं, तो उसमें केवल मॉल जाने या रेस्टोरेंट में खाना खाने के कार्यक्रम न रखें, बल्कि किसी स्थानीय कला प्रदर्शनी का टिकट लें, किसी नाटक के दर्शक बनें या लाइव संगीत की महफिल का हिस्सा बनें। इससे आपके स्वास्थ्य और जीवन पर सकारात्मक असर पड़ेगा।

क्या कहती है स्टडी: वैज्ञानिकों द्वारा किया गया अध्ययन इस बात का पुख्ता प्रमाण है कि कला कोई विलासिता नहीं, बल्कि दीर्घायु और स्वस्थ जीवन के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है। जाहिर है, कला पर खर्च किया गया आपका समय और पैसा केवल

मनोरंजन पर नहीं, बल्कि आपके जीवन के कीमती और स्वस्थ वर्षों को बढ़ाने पर निवेश है। सीधी-सी बात है कि कला से जुड़िए और लंबी उम्र पाइए।

स्टडी का तरीका: जापान के नेशनल सेंटर फॉर जेरियाट्रिक्स एंड जेरोंटोलॉजी और यूके के शोधकर्ताओं ने लगभग 10 से अधिक वर्षों तक हजारों वयस्कों के जीवन चक्र और उनकी सांस्कृतिक आदतों का विश्लेषण किया। वैज्ञानिकों ने डीएनए प्रणालियों और कोशिकाओं के बूढ़े होने की गति को मापा। इस शोध से जो बातें सामने आईं, उनसे यह साबित हुआ है कि सिनेमा, संगीत कार्यक्रम और कला प्रदर्शनियों में भाग लेने से इंसान की जैविक उम्र बढ़ने की प्रक्रिया धीमी हो जाती है। नियमित रूप से सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय रहने वाले लोगों की उम्र न केवल लंबी होती है, बल्कि उनका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य भी काफी बेहतर रहता है। इस शोध में शामिल वैज्ञानिकों ने पाया कि जो लोग सप्ताह में कम से कम एक बार किसी सांस्कृतिक गतिविधि (जैसे फिल्म, नाटक या संगीत) का हिस्सा बनते हैं, उनकी जैविक उम्र न जाने वालों की तुलना में लगभग एक वर्ष कम पाई गई। कलात्मक गतिविधियों में सक्रियता से शरीर के बूढ़े होने की वार्षिक दर में करीब 4 प्रतिशत तक की गिरावट देखी गई है। जापान दुनिया में सबसे अधिक औसत आयु वाले देशों में शीर्ष पर है, जिसका एक बड़ा कारण वहां की जीवनशैली है। जब बुजुर्ग या वयस्क किसी पेंटिंग, प्रदर्शनी या लाइव कॉन्सर्ट में जाते हैं, तो उन्हें न केवल मानसिक संतोष मिलता है, बल्कि वे समाज के अन्य लोगों से भी जुड़ते हैं।

व्यायाम जैसा प्रभाव: वैज्ञानिकों का मानना है कि नियमित रूप से कला दीर्घाओं या संगीत समारोहों में जाना शरीर पर उतना ही सकारात्मक जैविक प्रभाव डालता है, जितना कि नियमित व्यायाम करना या धूम्रपान/शराब जैसी लत को छोड़ना।

शारीरिक-मानसिक तंत्र पर प्रभाव: यह शोध केवल सतही आंकड़ों पर आधारित नहीं है, बल्कि इसके पीछे गहरा न्यूरोलॉजिकल और बायोलॉजिकल विज्ञान काम करता है। जब हम किसी मूवी, म्यूजिक कंसर्ट या आर्ट एग्जीबिशन का हिस्सा बनते हैं, तो हमारे शरीर में कई बदलाव होते हैं। जैसे- कलात्मक माहौल में समय बिताने से मस्तिष्क में तनाव पैदा करने वाले हार्मोन 'कोर्टिसोल' का स्तर तुरंत गिर जाता है। इससे हृदय स्वास्थ्य बेहतर होता है और असमय आने वाले हार्ट अटैक का खतरा कम होता है। म्यूजिक कंसर्ट की धुनें या किसी फिल्म की सम्मोहक कहानी हमारे मस्तिष्क में डोपामाइन, ऑक्सीटोसिन और एंडोर्फिन जैसे न्यूरोट्रांसमीटर को रिलीज करती हैं। ये हार्मोन दर्द कम करते हैं, मूड बेहतर बनाते हैं और शरीर में हीलिंग की प्रक्रिया को तेज करते हैं। उम्र बढ़ने और अंगों के खराब होने का बड़ा कारण शरीर के अंदरूनी हिस्सों में होने वाली सूजन है। जो लोग कलात्मक अभिव्यक्तियों से जुड़े, उनके शरीर में 'साइटोकिंस' (सूजन बढ़ाने वाले प्रोटीन) का स्तर कम पाया गया, जिससे इम्यून सिस्टम मजबूत बना रहता है।

अकेलापन वृद्ध अवस्था में एक साइलेंट किलर की तरह काम करता है। थिएटर और कंसर्ट हॉल जैसे सार्वजनिक स्थान लोगों को एक साझा मंच प्रदान करते हैं, जिससे सामाजिक अलगाव खत्म होता है और जीवन जीने की इच्छा मजबूत होती है। *

गीत
प्रो. शरद नारायण खरे

बरखा की बहार

ताल-तलैयां रीत गए थे नदियां भी थीं सूखी।
बुझा-बुझा मन रहता था और काया भी थी रूखी।।
बरखा की बूंदों से पर अब, मिला खुशी का खत है।
बहुत दिनों के बाद सभी की खिली-खिली तबियत है।।
कंठ शुष्क थे, जी घुटता था, बेचैनी मुस्काती।
सारा आलम व्यथित हुआ था, सांसें भी थम जाती
हरियाली धरती पर बिखरी, लगता सुखद सतत है।
बहुत दिनों के बाद सभी की खिली-खिली तबियत है।।
स्वेद बहा करता था निशिदिन पर अब जल साथी है।
आसमान से अमिय बरसता, हर शय अब गाती है।।
मौसम तो मनभावन लगता, हर पल उल्लासित है
बहुत दिनों के बाद सभी की, खिली-खिली तबियत है।।
बूंदें लाईं नवल संदेशे, अमन-चैन के मेले।
बच्चे नाव चलाते जल में, लिए हर्ष के रेले।।
जीवन को नवरूप मिला, कृषक हुआ आनंदित है।
बहुत दिनों के बाद सभी की खिली-खिली तबियत है।।

लघुकथा / संजय मृदुल

गुरु दक्षिणा

रमा ने दरवाजा खोला तो सामने एक नौजवान खड़ा था। असमंजस से डूबे हुए स्वर में रमा ने पूछा, 'जी कहिए, किससे मिलना है आपको?'

'अरे रमा आंटी! पहचाना नहीं मैं हूं रिंटू! कई साल पहले यहीं आपके पड़ोस में रहते थे ना हम।' कहकर रिंटू चुप हो गया।

'अरे हां, रिंटू! इतने सालों बाद तुम्हें यूं देखकर थोड़ी हैरान हो गई थी मैं।' रमा को याद आया तो मुस्कुराते हुए उसका हाथ पकड़ भीतर ले आई। रमा अतीत को याद करने लगी। रिंटू के पिता सरकारी कर्मचारी थे। कई साल पहले ट्रांसफर से यहां पड़ोस में रहने आए थे। दो तीन साल रहकर फिर और किसी शहर में चले गए थे।

'तुम अचानक यहां कैसे बेटा? और तुम्हे हम, ये घर याद था अब तक?' रमा ने रिंटू से प्रश्न किया। 'जी आंटी! मेरी बैंक में नौकरी लगी है और पहली पोस्टिंग इसी शहर में मिली है। कुछ दिन पहले ही आया हूं यहां। मां ने याद दिलाया कि आपसे जरूर मिलना। वैसे भी आंटी, भूलने का तो सवाल ही नहीं उठता आपको। आपकी वजह से तो आज मैं यहां तक पहुंचा हूं। आप की दी हुई सीख भूल चुका होता तो पापा की तरह शराबी, जुआरी हो गया होता।'

रमा को बिसरा हुआ सब याद आने लगा। रिंटू के पिता आदतन शराबी थे। करेला और नीम चढ़ा यह कि जुए का भी जबरदस्त नशा था। आए दिन घर पर महाभारत होता। रिंटू की मां भी परिस्थितियों के कारण गुस्सैल हो गई थी। रोज-रोज की मारपीट, झगड़े ने रिंटू का बचपन छीन लिया था। जैसे ही शाम होती वो भागकर रमा के घर आ जाता। जब तक उसके पिता की आवाज आनी बंद नहीं होती, तब तक उन्हीं के पास दुबका रहता। रमा को भी उस नन्हे बच्चे पर तरस आता। उसे खाने को देती, पढ़ाती, नई बातें सिखाती।

'क्या सोचने लगी आंटी? मैं आपसे ही मिलने आया हूं। आज गुरु पूर्णिमा भी है तो और कभी इससे शुभ मुहूर्त नहीं मिलता आपसे मिलने आपका आशीर्वाद लेने का।' रिंटू की बात सुनकर रमा वर्तमान में लौट आई। रिंटू को इस तरह खुश और विश्वास से भरा हुआ देखकर उसे अच्छा लग रहा था।

'घर में सब कैसे हैं रिंटू?' रमा ने रिंटू से पूछा। 'सब कौन आंटी? मैं और मां ही हैं। पापा तो कुछ साल पहले चल बसे। उनकी जगह मां को नौकरी मिल गई।' कुछ ठहरकर रिंटू फिर बोला, 'याद है आंटी, जब मैं रोज आपके यहां आकर छुपता था, आप कितना समझाती थीं मुझे। जब हम शहर छोड़कर जाने वाले थे आपने एक बात कही थी उसी बात ने मुझे आज यह मुकाम दिया है।'

'ऐसा क्या कहा था मैंने? मुझे तो याद नहीं।' रमा ने सवाल किया।

'हमारे घर की हालत तो आपको याद होगी। जब हम शहर छोड़कर जाने वाले थे, तब आपने मुझसे कहा था- रिंटू! कमल केवल कीचड़ में ही खिलता है। तुम्हारे घर के हालात कितने भी खराब हों तुम कभी अपने पापा की तरह बनने की सोचना भी मत। हमेशा सोचना कि कैसे इनके तरह ना बनूं? खूब पढ़ना, मेहनत करना, अपनी मां को सारी खुशियां देना। देखना एक दिन तुम्हारे पापा भी समझ जाएंगे सुधर जाएंगे। बस सब्र रखना। ...और आंटी जी, मैंने आपकी बात को गांठ बांध लिया। जितनी भी मुश्किल आई, हार नहीं माना। घर में जितना भी माहौल खराब रहा, मां को समझाता रहा कि एक दिन सब अच्छा हो जाएगा। और देखिए आज मैं एक अच्छी नौकरी पर हूं। बस दुःख यही है कि पापा नहीं है। उन्हें भी खुशी तो होती आज।' रिंटू भावुक हो गया। 'बिल्कुल होती बेटा। कौन सा बाप बेटे की सफलता पर खुश नहीं होता। भले ही उन्होंने कितने गलत काम किए...' रमा बोली। 'जी आंटी। आपने जो भी सिखाया था उसी का यह परिणाम है।' कहते हुए रिंटू ने अपने बैग में से कुछ सामान निकाला, 'ये मेरी तरफ से कुछ भेंट है, मेरी तरफ से गुरु दक्षिणा मान कर स्वीकार कर लीजिए।' रमा की आंखों में आंसू झिलमिला उठे। स्नेह से रिंटू के सिर पर हाथ फेरा। वाकई कीचड़ में कमल खिलते देख लिया था उसने। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

समय-समाज की कहानियां

गत वर्ष दिवंगत हुए प्रखर कथाकार अवधेश प्रीत की नई कहानियों के संग्रह 'मिनी और अन्य कहानियां' में बारह कहानियां संकलित हैं। इन कहानियों में जहां एक ओर लेखक की वह गहन दृष्टि नजर आती है, जिससे वे अपने समय में होने वाले विचलन को लक्षित करते हैं, साथ ही राजनीतिक और सामाजिक सरोकारों को लेकर उनकी प्रतिबद्धता भी प्रकट होती है। शीर्षक कहानी 'मिनी' का फलक अत्यंत विस्तृत है, जिसमें मीडिया की भूमिका, लोगों के चारित्रिक क्षरण और स्त्री चेतना को स्वर दिया गया है। 'ये शरीफ लोग' कहानी हमारे समय की राजनीति और समाज के उस स्याह यथार्थ को सामने लाती है, जिसमें एक स्त्री भरपूर संकल्प के साथ संघर्ष के लिए कदम तो बढ़ाती है लेकिन लोगों के संबल के अभाव में हार मान लेती है। 'बारिश' कहानी आम इंसान के रोजमर्रा के खटराग और उसके अंतर्द्वंद्व को सामने लाती है। 'कॉफी' एक वृद्ध दंपती की भावनाओं और उनके अतीत की स्मृतियों को व्यक्त करती है तो 'उस मोड़ का अफसाना' अपने-अपने दांपत्य जीवन से आबद्ध दो सहेलियों के अतीत और वर्तमान प्रेम संबंध की कोमल-खुरदरी अनुभूतियों को पूरी भावुकता से स्वर देती है। पठनीयता से भरपूर और भाषा में स्थानीयता की सोंधी गंध लिए ये कहानियां, आत्मविवेचन के लिए भी प्रेरित करती हैं। *

किताब: मिनी और अन्य कहानियां(कहानी-संग्रह), **लेखक:** अवधेश प्रीत, **मूल्य:** 299 रुपए, **प्रकाशक:** राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

सीजनल ट्रैवलिंग / समीर चौधरी

जुलाई-अगस्त के महीनों में जहां देश के अधिकांश हिस्से बारिश से सराबोर रहते हैं, वहीं कुछ खूबसूरत पर्यटन स्थल, इस मौसम में और भी मोहक और आकर्षक हो जाते हैं। कहीं फूलों की घाटियां खिल उठती हैं, तो कहीं झरने, जंगल, पहाड़ और धुंध पर्यटकों को शानदार अनुभव प्रदान करते हैं। यहां देश के ऐसे ही कुछ शानदार मानसून ट्रैवल डेस्टिनेशंस के बारे में बता रहे हैं।

मानसून में घुमक्कड़ी के लिए बेस्ट

ये अमेजिंग ट्रैवल डेस्टिनेशंस

हरियाली से ढंकी वादियों वाला कुर्ग

कर्नाटक राज्य में स्थित कुर्ग, दक्षिण भारत का सबसे विख्यात मानसून ट्रैवल डेस्टिनेशन है। जुलाई-अगस्त के महीने में यह स्थान कोहरे से ढंके कॉफी प्लांटेशनों, पानी से भरे झरनों और हरे-भरे जंगलों में तब्दील हो जाता है। इन्हीं महीनों में ही यहां ककाडा का कोडव माह भी पड़ता है, जब बांस, जंगली मशरूम और मेडिसिनल यूज वाली मड्डु थोप्पु पत्तियां, स्थानीय व्यंजनों का हिस्सा बन जाती हैं। आप यहां पहाड़ों में लॉन्ग ड्राइव करते हुए ऐबी फाल्स, राजा की सीट और दुबारे एलीफेंट कैंप पर रुक सकते हैं या प्लांटेशन स्टे में रहकर बारिश का आनंद ले सकते हैं। *

शांत-मनमोहक हिल स्टेशन भंडारदरा

महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में स्थित एक बेहद खूबसूरत और शांत हिल स्टेशन है भंडारदरा। यह सह्याद्री की पहाड़ियों में प्रवारा नदी के किनारे बसा हुआ है और अपने शानदार झरनों, प्राचीन किलों और हरी-भरी वादियों के लिए जाना जाता है। यह मुंबई से लगभग 185 किलोमीटर दूर है। सड़क मार्ग से गाड़ी द्वारा यहां पहुंचने में करीब 4 से 4.5 घंटे का समय लगता है। यहां के प्रमुख आकर्षणों में से एक विल्सन डैम, प्रवारा नदी पर बना भारत के सबसे पुराने बांधों में से एक है। बारिश के मौसम में विल्सन डैम से गिरता हुआ पानी बिल्कुल छतरी जैसा आकार बनाता है, इसीलिए इसे अंब्रेला फॉल कहते हैं। यहां स्थित रंधा फॉल को 'इंडियन नियाग्रा फॉल्स' भी कहा जाता है, जो एक गहरी खाई में लगभग 170 फीट की ऊंचाई से गिरता है। इस धुंध भरे मौसम में भंडारदरा में कैंपिंग का भरपूर आनंद ले सकते हैं। *

हिमालय की गोद में बसी फूलों की घाटी

जुलाई-अगस्त में उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित फूलों की घाटी, जो कि यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज में लिस्टेड है, भी खिलने लगती है। हजारों अल्पाइन फूल पश्चिम हिमालय की गोद में बसी इस वादी को रंगों के इंद्रधनुष में बदल देते हैं। यह खूबसूरत घाटी साल में सीमित समय (1 जून से 31 अक्टूबर) के लिए ही खुलती है क्योंकि यह अधिकतर समय बर्फ से ढंकी रहती है। फूलों की घाटी की सैर करते हुए आप हेमकुंड साहिब भी जा सकते हैं जो एक सिख धर्मावलंबियों का तीर्थ स्थल है और इसी मौसम में दर्शन के लिए खुलता है। *

सुंदर-मनमोहक लैंडस्केप तवांग

अरुणाचल प्रदेश में तवांग की यात्रा करने के लिए भी सबसे अच्छा महीना जुलाई-अगस्त ही है। ऊंचाई पर बसे इस शहर में तापमान ठंडा रहता है और हरे-भरे पहाड़ी लैंडस्केप आकर्षित करते हैं। सेला पास, माधुरी झील और बुम-ला का कुदरती सौंदर्य आप कभी नहीं भूल पाएंगे। अगर मौसम खराब न हो तो कुछ समय 17वीं शताब्दी में निर्मित तवांग मठ में भी अवश्य गुजारें। यह भारत का सबसे बड़ा बौद्ध मठ है। इसके साथ ही यहां फूलों भरी घाटियों और घुमावदार ग्लेशियर झीलें भी दर्शनीय हैं। *

जन्नत जैसा लाहौल-स्पीति

हिमाचल प्रदेश में पहले लाहौल और स्पीति के रूप में दो अलग-अलग जिले थे, लेकिन अब इन्हें मिलाकर एक जिला लाहौल-स्पीति कर दिया गया है। जुलाई के महीने में इस क्षेत्र में पर्यटकों के आने का सिलसिला शुरू हो जाता है, क्योंकि बर्फ पिघलना आरंभ हो जाता है और सड़कों पर चलना संभव हो जाता है। एडवेंचर पसंद करने वालों, प्रकृति प्रेमियों और शहरी जीवन की तेजी व शोर-शराबे से बचने वालों के लिए लाहौल-स्पीति जुलाई-अगस्त के महीनों में जन्नत जैसा हो जाता है। इस समय मौसम इतना सुहावना होता है कि ठंड का एहसास तक नहीं होता और गर्मी लगने का तो सवाल ही नहीं उठता है। सबसे अच्छी बात यह है कि लाहौल-स्पीति, रेन शैडो एरिया है, जिसका अर्थ है कि यहां जुलाई में न के बराबर बारिश पड़ती है, इसलिए जब देश के बाकी हिस्सों में मानसून अपने चरम पर होता है तो उससे बचने के लिए लाहौल-स्पीति में आनंदमय शरण ली जा सकती है। *

कांवड़ यात्रा शिवभक्ति के साथ संकल्प-श्रद्धा की पावन यात्रा

कंधों पर कांवड़, पैरों में छाले और जुबां पर सिर्फ एक ही उद्घोष- हर-हर महादेव। सावन आते ही सड़कों पर उमड़ता आस्था का यह जनसैलाब, सदियों पुरानी उस परंपरा की कहानी कहता है, जहां आस्था, त्याग और शिवभक्ति साथ-साथ चलते हैं।

आस्था
शिखर चंद जैन

शिव आराधना का सबसे पावन और कठिन अनुष्ठान है कांवड़ यात्रा। श्रावण मास की शुरुआत से ही चारों ओर 'बम-बम भोले', 'बोल बम' और 'हर-हर महादेव' की गूंज सुनाई देने लगती है। केसरिया वस्त्र पहने लाखों श्रद्धालु कांवड़िए पवित्र नदियों से जल भरकर पैदल यात्रा करते हैं और शिवलिंग पर जलाभिषेक करते हैं। कांवड़ यात्रा केवल एक धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि अगाध श्रद्धा, मानसिक संकल्प और शारीरिक सहिष्णुता का जीवंत प्रतीक है। ऊंच-नीच के भेदभाव को भुलाकर, केवल शिव भक्ति में लीन होकर एक ही दिशा में कदम बढ़ाना इस यात्रा को अलौकिक और अद्वितीय बनाता है।

कांवड़ यात्रा की शुरुआत: कांवड़ यात्रा की शुरुआत को लेकर कई धार्मिक-पौराणिक कथाएं एवं मान्यताएं प्रचलित हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार परशुराम जी को सबसे पहला कांवड़िया माना जाता है। उन्होंने उत्तर प्रदेश के बागपत के पास 'पुरा महादेव' नाम के दिव्य शिवलिंग की स्थापना की थी। परशुराम जी ने गढ़मुक्तेश्वर से पवित्र गंगाजल लाकर इस शिवलिंग पर जलाभिषेक किया था। उस समय श्रावण मास चल रहा था। तभी से इस परंपरा की शुरुआत मानी जाती है। एक अन्य कथा के अनुसार, समुद्र मंथन के समय जब हलाहल विष निकला, तो ब्रह्मांड को बचाने के लिए भगवान शिव ने उसे अपने कंठ में धारण कर लिया। विष के प्रभाव से शिव जी का कंठ नीला पड़ गया और उनका शरीर तपने लगा। शिव जी के शरीर की जलन को शांत करने के लिए सभी देवताओं ने उन पर पवित्र नदियों का जल चढ़ाया। रावण द्वारा वैद्यनाथ धाम में गंगाजल लाकर शिव जी को अर्पित करने की कथा भी प्रचलित है।

कांवड़ यात्रा की महत्ता: यात्रा के दौरान कांवड़िए मांस, मदिरा, तामसिक भोजन और अपशब्दों से पूरी तरह दूर रहते हैं। बिना जूते-चप्पल के पैदल चलना सहनशीलता सिखाता है। मान्यता है कि जो भक्त सच्चे मन से गंगाजल लाकर शिव जी का अभिषेक करता है, उसकी सभी सांसारिक बाधाएं दूर हो जाती हैं और मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

कई प्रकार की कांवड़ यात्राएं

सामान्य कांवड़: इसमें कांवड़िए आराम से यात्रा करते हैं। वे रास्ते में बने शिविरों में रुक सकते हैं, भोजन कर सकते हैं और सो सकते हैं। रुकने के दौरान कांवड़ को स्टैंड या पेड़ पर टांगा जाता है।
डाक कांवड़: इसमें जल भरने के बाद कांवड़िया बिना रुके लगातार दौड़ता या तेज चलता है। यदि कोई डाक कांवड़िया थक जाता है, तो उसकी टीम का दूसरा सदस्य कांवड़ लेकर दौड़ना शुरू करता है।
खड़ी कांवड़: इस यात्रा में कांवड़ को हमेशा गति में रखना होता है। यदि कांवड़िया आराम करता है, सोता है तो उसकी जगह किसी दूसरे सहयोगी को कांवड़ को अपने कंधे पर लेकर खड़े रहना या चलना पड़ता है।
दंडी कांवड़: इसमें श्रद्धालु नदी से जल भरने के बाद शिव मंदिर तक की पूरी दूरी साष्टांग प्रणाम करते हुए पूरी करते हैं। इस यात्रा को पूरा करने में हफ्तों या महीनों का समय लग जाता है।

प्रसिद्ध कांवड़ यात्राएं: भारत में दो सबसे बड़ी कांवड़ यात्राएं आयोजित होती हैं। पहली हरिद्वार यात्रा, जिसमें श्रद्धालु हरिद्वार, ऋषिकेश या गौमुख से गंगाजल भरते हैं। ये श्रद्धालु वापस आकर अपने स्थानीय शिव मंदिरों में जल चढ़ाते हैं। दूसरी सुल्तानगंज से देवघर तक की यात्रा। इस यात्रा में श्रद्धालु सुल्तानगंज से उत्तरवाहिनी गंगा का जल लेते हैं और देवघर स्थित वैद्यनाथ धाम में ज्योतिर्लिंग पर जल अर्पित करते हैं। *

भूमिका / शैलेंद्र सिंह

जंगलों के नायक-रक्षक फॉरेस्ट रेंजर

जंगली जानवरों ही नहीं वन संपदा की सुरक्षा करने और उन्हें संवर्धित करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका फॉरेस्ट रेंजर्स की होती है। ये किस-किस तरह की भूमिकाएं निभाते हैं, इस बारे में आपको भी जानना चाहिए।

जब भी भारत के बाघों की बढ़ती संख्या, एशियाई शेरों और काजीरंगा के गैंडों की सुरक्षा या हाथियों के संरक्षण की बात होती है, तो सुर्खियों में अकसर राष्ट्रीय उद्यान, अभ्यारण्य और सरकारी योजनाएं होती हैं। लेकिन इन सफलताओं के पीछे ऐसे हजारों चेहरे भी होते हैं, जिनका नाम शायद ही कभी सुर्खियां बनता हो। ये हैं हमारे फॉरेस्ट रेंजर और फ्रंट लाइन वन सुरक्षाकर्मी। ये वो लोग होते हैं, जो हर मौसम, हर परिस्थिति और हर खतरे के बीच जंगलों की रक्षा में दिन-रात डटे रहते हैं। यही कारण है कि 31 जुलाई को मनाया जाने वाला विश्व रेंजर दिवस केवल एक औपचारिक दिवस भर नहीं है, सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर भी है।

निभाते हैं कई भूमिकाएं: वन या फॉरेस्ट रेंजर का काम केवल जंगल में गश्त लगाना भर नहीं है, उसकी जिम्मेदारी वास्तव में किसी एक विभाग तक सीमित नहीं है। उन्हें वन्यजीवों की सुरक्षा करनी पड़ती है, अवैध शिकार पर नजर रखनी होती है, लकड़ी की तस्करी रोकनी होती है, जंगल में लगने वाली आग पर नियंत्रण पाना होता है, मानव-वन्यजीव संघर्ष की स्थिति में लोगों और जानवरों दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी होती है और कई बार घायल वन्यजीवों के बचाव अभियान में भी हिस्सा लेना पड़ता है। मतलब यह एक ऐसी नौकरी है, जिसमें हर दिन एक नहीं बल्कि कई तरह की चुनौतियों से निपटना होता है।

कठिनाइयों में निभाते दायित्व: एक वन रेंजर का दिन अकसर सूर्योदय से पहले शुरू हो जाता है। वह कई किलोमीटर तक पैदल गश्त करता है। दुर्गम पहाड़ियों पर चढ़ाई करता है। घने जंगलों में घंटों तक निगरानी करता है और रात में भी सतर्क रहना पड़ता है। यह सब उसके काम का हिस्सा है। बरसात, भीषण गर्मी या कड़ाके की ठंड, प्रकृति का कोई भी मौसम उसकी जिम्मेदारी को कम नहीं करता बल्कि कई बार उसे ऐसे इलाकों में काम करना पड़ता है, जहां मोबाइल नेटवर्क तक काम नहीं करता।

हर क्षेत्र में सक्रिय: निःसंदेह आज भारत दुनिया का सबसे ज्यादा जंगली बाघों वाला देश है। लेकिन यह उपलब्धि केवल सरकारी नीतियां बना देने भर का परिणाम नहीं है बल्कि उन वन कर्मियों की सतत मेहनत का भी नतीजा है, जो कैमरा ट्रैप की निगरानी करते हैं, जंगल में गश्त करते हैं, संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखते हैं और शिकारियों के खिलाफ कार्यवाई करते हैं। गुजरात में एशियाई शेरों की सुरक्षा का सवाल हो, असम में एक सींग वाले गैंडों का संरक्षण हो या दक्षिण भारत के हाथी गलियारों की निगरानी करनी हो, हर जगह वन रेंजर सबसे महत्वपूर्ण कड़ी होते हैं।

बढ़े हैं नए दायित्व: हाल के कुछ सालों में वन रेंजरों का कार्यक्षेत्र और भी ज्यादा व्यापक हुआ है। जलवायु परिवर्तन के कारण पूरी दुनिया के जंगलों में लगने वाली आग की घटनाएं बढ़ रही हैं, वर्षा के पैटर्न बदल रहे हैं और मानव-वन्यजीव संघर्ष के मामले भी बढ़े हैं। ऐसे में वन रेंजर अब केवल वन्यजीवों के संरक्षक भर नहीं हैं बल्कि पर्यावरणीय आपदाओं से निपटने वाले अग्रिम प्रहरी भी बन गए हैं। वे जंगलों की स्थिति का आंकलन करते हैं, जलस्त्रोतों की निगरानी करते हैं और स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर संरक्षण योजनाओं को लागू करते हैं। तकनीक ने इनके काम को नई दिशा दी है। आज कैमरा ट्रैप, ड्रोन, जीपीएस आधारित स्मार्ट पेट्रोलिंग, रेडियो कॉलर, सैटेलाइट मैपिंग और एआई जैसे उपकरण वन्यजीव संरक्षण में मदद कर रहे हैं। मगर ये सारी तकनीक सिर्फ सहायक हैं। अंतिम निर्णय और जोखिम उठाने का साहस केवल और केवल वन रक्षकों का ही होता है। इसलिए आज भी मौके पर त्वरित कार्यवाई वन रेंजरों की सूझबूझ और अनुभव के जरिए ही होती है।

रिस्क भी है बहुत: फॉरेस्ट रेंजर्स का काम जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही जोखिम भरा भी है। कई बार उन्हें हथियाबंद शिकारियों और वन माफिया का भी सामना करना पड़ता है। दूसरी तरफ जंगली हाथी, बाघ, तेंदुए या भालू जैसे वन्यजीवों से अचानक सामना भी जानलेवा हो सकता है। जंगल की आग, बाढ़, भू-स्खलन और विषैले जीव-जंतु भी उनकी राह में कई तरह के जानलेवा रोड़े अटकाते हैं। यह अकारण नहीं है कि दुनिया में हर वर्ष बड़ी संख्या में वन रेंजर ड्यूटी के वक्त अपनी जान गंवा देते हैं। विश्व रेंजर दिवस वास्तव में ऐसे ही बहादुर वन रक्षकों को श्रद्धांजलि देने का भी दिन है। *

एक्टिंग की दुनिया में विक्रांत मेसी का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। टीवी से शुरू हुआ विक्रांत का सफर फिल्म और वेब सीरीज तक पहुंच चुका है। हर किरदार में कुछ नया तलाशने वाले विक्रांत इन दिनों नेटफ्लिक्स की वेब सीरीज 'मुसाफिर कैफे' को लेकर चर्चा में हैं। यहां प्रस्तुत है इस वेब सीरीज और एक्टिंग करियर पर विक्रांत मेसी से हुई बातचीत के प्रमुख अंश।

लवस्टोरी बेस्ड बहुत दिलचस्प वेब सीरीज है 'मुसाफिर कैफे': विक्रांत मेसी

खास मुलाकात
आरती सक्सेना

विक्रांत मेसी ने अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत टीवी से की थी। उसके बाद विक्रांत ने फिल्मों में काम शुरू किया। उनको फिल्म '12वीं फेल' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कई वेब सीरीज में भी विक्रांत मेसी ने अलग-अलग तरह का अभिनय करके दर्शकों के बीच अपनी खास पहचान बनाई। 24 जुलाई को नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई वेब सीरीज 'मुसाफिर कैफे' में विक्रांत मेसी रोमांटिक अंदाज में नजर आ रहे हैं। साथ ही विक्रांत इस सीरीज के को-प्रोड्यूसर भी हैं। 'मुसाफिर कैफे' में उनका काम करने का अनुभव कैसा रहा? इसके अलावा अपने एक्टिंग करियर से जुड़े कई दिलचस्प सवालों के जवाब दिए विक्रांत मेसी ने।

रोमांटिक वेब सीरीज 'मुसाफिर कैफे' में आप एक्टर होने के साथ-साथ को-प्रोड्यूसर भी हैं। इस वेब सीरीज को प्रोड्यूस करने और इसमें अभिनय करने का खयाल आपके मन में कैसे आया?

एक एक्टर की हमेशा ख्वाहिश होती है कि उसे अच्छी कहानी पर काम करने का या अभिनय करने का मौका मिले। मेरी भी हमेशा कोशिश रहती है कि मैं जो भी काम करूं या जो भी किरदार निभाऊं, उसमें मुझे कुछ अलग कुछ नया करने का मौका मिले। ऐसे में जब मुझे 'मुसाफिर कैफे' वेब सीरीज का ऑफर आया तो मुझे इसकी कहानी अच्छी लगी, लिहाजा मैंने इस वेब सीरीज में एक्टिंग करने के साथ-साथ बतौर सह निर्माता भी नई शुरुआत की। चूंकि यह सीरीज नेटफ्लिक्स की है और मैं नेटफ्लिक्स के साथ पहले भी काफी काम कर चुका हूं, इसलिए मुझे लगा कि मैं 'मुसाफिर कैफे' प्रोड्यूस भी करूं। यह लवस्टोरी पर बेस्ड बहुत ही दिलचस्प सीरीज है, जिसमें पहाड़ों में रोमांस दिखाया गया है।

'मुसाफिर कैफे' के एक सीन में को-एक्ट्रेस के साथ विक्रांत मेसी

'मुसाफिर कैफे' में रोमांस को दो तरीके से दिखाया गया है, जिसमें एक तरफ जवानी की शुरुआत के दौरान का प्यार है, जो हमें प्यार करना सिखाता है और दूसरी तरफ एक ऐसा भी प्यार है, जो सच्चे प्यार की अहमियत समझाता है। इन दोनों में से कौन-सा प्यार आपको आकर्षित करता है?

मेरे खयाल में अगर जिंदगी का तजुर्बा हासिल करना है तो दोनों प्यार का अनुभव पाना जरूरी है। एक बार प्यार में दिल टूटने के बावजूद अगर आपको दूसरा प्यार मिल जाता है तो इसके बाद आपको सच्चे प्यार की परख होती है। और यह फर्क तभी पता चलता है, जब आप दोनों प्यार की अच्छाई-बुराई का अनुभव करते हैं। जवानी में होने वाला प्यार आपको खुशी देता है, तो एक उम्र के बाद मैच्योरिटी में मिला प्यार आपको सुकून देता है। यही इस सीरीज में दिखाया गया है। इस सीरीज की कहानी दिव्य प्रकाश दुबे की नॉवेल पर बेस्ड है।

इस सीरीज में एक्टिंग के साथ-साथ को-प्रोड्यूसर की जिम्मेदारी संभालना आपके लिए कितना मुश्किल या कितना आसान रहा?

सच कहूं तो मुझे तकनीकी पक्ष की ज्यादा जानकारी नहीं है। लेकिन शरण्या राजगोपाल जैसी सक्षम लेखिका और टेरीबली टिनी टेल्स जैसे बेहतरीन प्रोडक्शन पार्टनर की वजह से बतौर निर्माता मेरे लिए काम करना आसान हो गया। इनके साथ काम करने के बाद मुझे प्रोडक्शन या तकनीकी पहलुओं पर ध्यान देने की जरूरत नहीं पड़ी। अगर दमदार कहानी हो, अच्छी स्क्रिप्ट और पूरी तैयारी हो तो आपको सेट पर जाकर काम करना आसान हो जाता है।

आपने छोटे पर्दे यानी टीवी से अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत करके बड़े पर्दे पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई। '12वीं फेल' के लिए तो आपको राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। अपने इस सफर को आप कैसे देखते हैं?

राष्ट्रीय पुरस्कार पाना एक कलाकार के लिए बहुत बड़े सम्मान की बात होती है। जब मुझे पता चला कि मुझे '12वीं फेल' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है, तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था। बाकी जहां तक टीवी से फिल्म और फिल्म से वेब सीरीज तक अभिनय सफर की बात है तो वह मुश्किल भी रहा और मजेदार भी, क्योंकि आपको जब कड़ी मेहनत करने के बाद सफलता का मजा चखने का मौका मिलता है तो एक अंदरूनी खुशी होती है। जिसे बयां नहीं किया जा सकता है।

काम के प्रति आपका उत्साह, आपकी लगन और ऊर्जा आज भी बरकरार है। आपके प्रेरणा स्रोत कौन हैं?

एक एक्टर कभी भी अपने काम से संतुष्ट नहीं होता और उसे ऐसा लगता है कि अभी बहुत कुछ करना बाकी है। यही जुनून उस एक्टर के लिए प्रेरणा स्रोत होता है। जब मुझे राष्ट्रीय पुरस्कार मिला तो कई लोगों ने मुझे यही सवाल किया, 'आपका लक्ष्य तो पूरा हो गया, क्या आगे भी आप ऐसे ही काम के प्रति प्रोत्साहित रहेंगे?' ऐसे में मेरा यही मानना है पुरस्कार या सम्मान यात्रा के पड़ाव हैं। असली लक्ष्य है, अच्छी कहानी के जरिए आम लोगों के बीच सच में बदलाव करना। *